Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 20 • 19 फरवरी - 25 फरवरी, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 17-02-2024 • पेज 12 • `10 रुपये

मर्यादा पत्र है गण का छत्र आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी मे त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव का हुआ भव्य आयोजन

विश्व का सातवां सबसे बड़ा, भारत का सबसे धनी, फिल्म, फैशन और फाइनेंस की दुनिया का संगम, देश की आर्थिक राजधानी, महाराष्ट्र की प्रशासनिक राजधानी, मुंबादेवी के नाम से जुड़ा हुआ मुंबई शहर। एक और गहराई का संदेश देता अरब सागर और दूसरी और गगनचुंबी इमारतें, भौतिकता की चकाचौंध में डूबा यह शहर पिछले कुछ महीनों से अध्यात्म की यात्रा कर रहा है। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी यहां के वासियों को साधना के शिखर और अध्यात्म की गहराई से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं। नंदनवन से विहार कर, मुंबई के उपनगरों को पावन करते हुए आचार्य प्रवर ने आर्थिक नगरी को मानो आध्यात्मिक नगरी में परिवर्तित कर दिया।

वाशी, नवी मुंबई।
१६ फरवरी, २०२४

माघ शुक्ल सप्तमी का दिव्य दिवस, जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्म संघ के महाकुंभ त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव का मुख्य दिवस कार्यक्रम मर्यादा पुरुषोत्तम युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ हुआ।

आचार्यप्रवर ने स्वयं खड़े होकर करवाया मर्यादा गीत का संगान:

गणाधिपति गुरुदेव तुलसी द्वारा रचित मर्यादा गीत **'भीखणजी स्वामी! भारी मर्यादा बांधी संघ में'** के संगान के समय पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने स्वयं खड़े होकर गीत का संगान किया। आचार्य भिक्षु, आचार्य तुलसी, तेरापंथ धर्मसंघ, मर्यादाओं आदि के सम्मान में अपने आराध्य के इस निर्णय के साथ ही सम्पूर्ण जन मेदिनी ने भी अपने स्थान पर खड़े होकर संगान में सहभागिता निभाई। बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि दिनेश कुमार जी ने मर्यादा घोष का उच्चारण करवाया।

सारी धरती पर बिछी अंशुमाला:

समणी वृंद ने समवेत स्वरों में तेरापंथ धर्मसंघ एवं मर्यादाओं की स्तुति में संगान किया:

सारी धरती पर बिछी अंशुमाला।
मिला है पंथ भिक्षु वाला।।

जय भिक्षु का वर अनुशासन, सारे जहां में गूंजेगा:

साध्वी वृंद ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति में ऐतिहासिक प्रसंगों के उदाहरण देते हुए कुछ ऐसे भाव प्रकट किए:

गण है मेरा मैं इस गण का, मज्जागत संस्कार है।
यही संघ की अखंडता का, एकमात्र आधार है।।

उन पुरखों ने स्वेद बहाकर, खून सुखाकर के अपना।
वैर-जेर के घूंट पिए, मंजूर किया मानों मरना।
भाई वेणी मुनि की याद हृदय में आग लगाती है।।

मुनि वृंद ने उपरोक्त गीत के माध्यम से तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु एवं संतों-सतियों द्वारा सहे कष्टों का वृतांत सुनाते हुए, गण निष्ठा की सीख दी।

(शेष पृष्ठ २ पर)

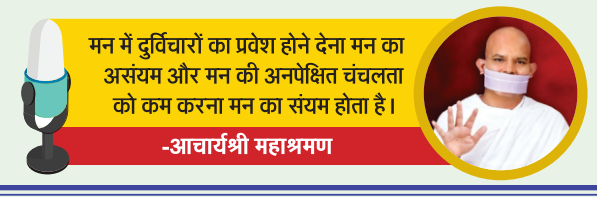

प्रथम पृष्ठ का शेष

तेरापंथ की नवम् साध्वी प्रमुखा ने दी मर्यादा में, गुरु आज्ञा में रहने की प्रेरणा:

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आज हम सभी तेरापंथ का यह सुरम्य प्रासाद देख रहें हैं, इसकी नीवों में त्याग और तप बोल रहा है। यह प्रासाद आज्ञा निष्ठा, अनुशासन निष्ठा, गुरु निष्ठा और गण निष्ठा के स्तंभों पर प्रतिष्ठित है। इसकी दीवारों पर अहंकार और ममकार के विसर्जन की गाथाएं लिखी हुई हैं। इसके परिपार्श्व में विकास के सुमन खिल रहें हैं। यह तेरापंथ धर्मसंघ न जाने कितने कितने आत्मार्थी लोगों के लिए आश्रय स्थल, आधार और त्राण बना हुआ है।

तेरापंथ की तेजस्विता निरंतर बढ़ रही है उसका कारण है कि यह अनुशासित और मर्यादित धर्म संघ है। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर अतीत का सिंहावलोकन, वर्तमान में व्यवस्थापन और भविष्य की नीतियों का निर्धारण होता है। यह समय परम पूज्य आचार्य प्रवर के लिए व्यस्ततम समय होता है। आचार्यवर इस समय संघीय गतिविधियों का निरीक्षण, साधु साध्वियों की पृच्छा, सारणा-वारणा एवं चतुर्मासों का निर्धारण करते हैं।

आचार्य भिक्षु अनुशासन के सूत्रधार थे, मर्यादा के मंत्रदाता थे, संगठन को चलाना जानते थे। उन्होंने अपनी प्रज्ञाबल के आधार पर अनुभवों की स्याही एवं श्रम की लौह लेखनी से मर्यादाओं की रेखाओं को खींचा। वे रेखाएं तेरापंथ की भाग्य रेखाएं बन गई। साधना का एक रूप है जिसमें साधु पांच महाव्रत, पांच समिति और तीन गुप्ति की आराधना करता है और दूसरे रूप में वह व्यवस्था के साथ जुड़ जाता है। जो व्यक्ति मर्यादा, अनुशासन, आज्ञा का सहारा लेता है वह विकास के शिखर को छू लेता है और जो व्यक्ति मर्यादा, अनुशासन और आज्ञा का पालन नहीं करता वह पतन के द्वार पर चला जाता है। हम गुरु इंगित की आराधना करें, मर्यादाओं के सूत्रों को अपने जीवन में उतारें।

तेरापंथ के राम का धर्मसंघ के नाम संदेश :

अनुकंपा के उत्प्रेरक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना में कहा-अहिंसा, संयम और तप से समन्वित धर्म उत्कृष्ट मंगल है। आज हम धर्म से जुड़े हुए संघ का १६०वां वार्षिक उत्सव- मर्यादा महोत्सव मना रहें हैं। जैन शासन में श्वेतांबर तेरापंथ परम्परा को शुरू हुए करीब २६४ वर्ष हो गये हैं। वि.सं. १८१७ में परम पूजनीय महामना आचार्य भिक्षु ने उसे संस्थापित किया था। उन्होंने संघ के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। वि.सं. १८५६, माघ शुक्ला सप्तमी को लिखा गया मर्यादा पत्र मर्यादा महोत्सव का आधार है, संघ का छत्र है।

'मर खपणो पिण सूंस नहीं भांगणों'

यह संगठन मूलतः अध्यात्म और धार्मिकता पर आधारित है। गृहत्यागी इसके सदस्य हैं, गृहवासी भी इससे जुड़े हुए हैं। मैं धर्मसंघ को श्रद्धा के साथ नमन करता हूँ। चारित्रात्माओं ने आत्म कल्याण के लिए, मोक्ष की प्राप्ति के लिए के चारित्र को स्वीकार किया है। सम्यक्त्व युक्त चारित्र अमूल्य संपदा है। यह अंतिम श्वास तक सुरक्षित रहे। सब चारित्रात्माओं का यह ध्येय सूत्र होना चाहिए :

१. मेरा साधुत्व मुझे प्यारा है ।
२. मेरा संघ मुझे प्यारा है।
३. मेरा गुरु मुझे प्यारा है।

हमारी आत्मनिष्ठा, संघ निष्ठा, आज्ञा निष्ठा, आचार निष्ठा और मर्यादा निष्ठा सतत प्रवर्धमान होती रहे। हमारे धर्मसंघ की मौलिक मर्यादाएं हैं:

१. सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
२. विहार-चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।
३. अपना-अपना शिष्य-शिष्या न बनाएं।
४. आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करें। दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।
५. आचार्य अपने गुरु भाई या शिष्य को उत्तराधिकारी चुने, उसे सब साधु-साध्वियां सहर्ष स्वीकार करें।

पदाधिकारियों को वर्ष में एक बार श्रावक संदेशिका पढ़ लेनी चाहिए:

हमारे यहां चारित्रात्माओं के लिए अनुशासन संहिता, मर्यादावली आदि एवं श्रावक-श्राविकाओं के लिए श्रावक संदेशिका निर्मित है। संस्थाओं के पदाधिकारियों को तो वर्ष में एक बार श्रावक संदेशिका पढ़ लेनी चाहिए। आचार्यप्रवर ने धर्मसंघ की संगठन मूलक एवं प्रवृत्ति मूलक संस्थाओं का नामोल्लेख करते हुए, उनकी विशेषताओं का मूल्यांकन करते हुए, उन्हें धार्मिक एवं आध्यात्मिक पथ पर प्रगति करने की पावन प्रेरणा प्रदान की। अणुव्रत अमृत वर्ष के उपलक्ष में १२ मार्च २०२४ तक प्रतिदिन गुरुकुलवास एवं बहिर्विहार के कार्यक्रमों में अणुव्रत गीत संगान की प्रेरणा देकर स्वयं उसका शुभारंभ किया।

चर्तुमासों की घोषणा :

१६०वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर पूज्य प्रवर ने स्वरचित गीत का संगान कर मर्यादा पत्र का वाचन किया। इंतजार की घड़ियों को विराम देते हुए आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों के चतुर्मासों, समणी केंद्रों एवं उपकेंद्रों की घोषणा की।

प्रेक्षाध्यान नामकरण के ५० वर्ष

पूज्य प्रवर ने प्रेक्षाध्यान नामकरण के ५० वर्षों के उपलक्ष में ३० सितंबर २०२४ से ३० सितंबर २०२५ तक प्रेक्षाध्यान वर्ष मनाने की घोषणा की। पूज्य प्रवर ने सन २०२५ की अक्षय तृतीया डीसा में करने की घोषणा की। साधु-साध्वियों एवं समणी वृंद द्वारा पंक्ति बद्ध, अनुशासन पूर्वक लेख पत्र का सामूहिक वाचन, आचार्य प्रवर द्वारा श्रावक-श्राविकाओं को श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन एवं संघ गान का संगान सबको एकता और मर्यादा का पाठ पढ़ा रहा था।

१६०वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर वाशी, नवी मुंबई में ५५ साधु, ११४ साध्वियां एवं ३६ समणियों कुल २०८ की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया ।

१६०वे मर्यादा महोत्सव के उपलक्ष मे युगप्रधान परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

ओ सन्तो! भैक्षव शासन प्यारा।
ओ सन्तो! जिनशासन रखवारा।।
भैक्षव शासन जिनशासन की सेवा धर्म हमारा ।।
आत्मसाधना करने खातिर सघ-शरण स्वीकारी।
आत्मा को भावित कर पाए सयम-तप के द्वारा ॥
साधर्मिक चारित्रात्माओ को साता पहुचाना।
पूर्ण समीक्षा कर मौके पर पचखाना सथारा ॥
आज्ञा-अनुशासन-आलोयण रत्नाधिक का सुविनय।
तथ्य भाषिता रखना हितकर वचन न बोले खारा ॥
निर्धारित आचार सुपालन मे हो निष्ठा पावन।
पच महाव्रत प्रवचनमाता देगे मोक्ष पिटारा ॥
गण-मर्यादा सरक्षण मे सतत सजगता वर हो।
जय जय शासन जय मर्यादा अनुगुजित हो नारा ॥
वीर भिक्षु तुलसी गुरु बालूनन्दन को शत वन्दन।
'महाश्रमण' वाशी नगरी मे फैला धर्म उजारा।
नवी मुम्बई महानगर मे फैला धर्म उजारा ॥
लय - रे भाई। ओ दै

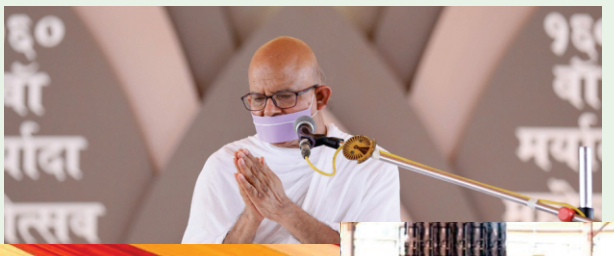

तेरापंथ के आचार्य का पहली बार हुआ उरण में पदार्पण

धर्म युक्त हो हमारा हर व्यवहार : आचार्यश्री महाश्रमण

उरण, ६ फरवरी, २०२४

बृहत्तर मुंबई में यात्रायित तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज नवी मुंबई के उरण क्षेत्र में द्विदिवसीय प्रवास हेतु पधारे। तेरापंथ के इतिहास में युवाचार्य एवं आचार्य के रूप में उरण की धरती पर पहली बार पधारने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ही हैं। आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए आचार्यप्रर ने फरमाया कि जीवन में व्यवहार का प्रयोग आमतौर पर करना होता है। चलना, खाना, बोलना, सोचना, बैठना, सोना आदि अनेक प्रवृत्तियाँ हमारे जीवन में चलती हैं, इन प्रवृत्तियों के साथ धर्म जुड़ जाए तो हमारा व्यवहार धर्म युक्त बन सकता है।

चलने के समय जीव हिंसा से बचा जाए तो अहिंसा धर्म का पालन हो सकता है। चलते समय भी यदि विचारों के प्रवाह में ज्यादा न बहें, सप्रयास विचार न करें, तो भाव क्रिया की स्थिति बन सकती है। साधु के तो ईर्या समिति ध्यातव्य है, गृहस्थ भी जीव हिंसा न हो जाए, इस बात का ध्यान रखें। चलते समय इधर-उधर ना देखें, बातें नहीं करें और चलते हुए खाना भी नहीं खाएँ। मन, वचन और काया का संयम रखें तो अहिंसा धर्म की साधना हो सकती है।

बोलने के साथ भी धर्म को जोड़ने का प्रयास करें। अनावश्यक न बोलें, कटुभाषा न बोलें, झूठी बात न बोलें। इन तीनों का संकल्प होने से बोलने के साथ भी धर्म जुड़ सकता है।

भोजन के प्रति आसक्ति न हो, द्वेष भी न हो। भोजन के समय राग-द्वेष मुक्ति, शांति, अनावश्यक खाने से बचाव, उणोदरी आदि प्रयोगों से भोजन के साथ भी धर्म को जोड़ा जा सकता है। जहाँ तक हो सके भोजन के समय मौन रहें, टीवी आदि का प्रयोग करने से भी बचें।

सोचने में भी संयम को जोड़ दें, एक नियत समय में सोचें। अनावश्यक दिमाग पर भार न हो जाए, इसलिए दिन भर न सोचें, समय निर्धारित कर लें। चिंतन और निर्णय आवेश की स्थिति में नहीं करें, शांति की अवस्था में सोचें। चिंतन के द्वारा भी किसी का बुरा न सोचें, आक्रोश का भाव न रहे। युक्ति संगत चिंतन करें और साथ में परिणामों की संभावना पर ध्यान दें। चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति साथ में जुड़े रहें।

लेटना है तो भी धर्म को जोड़ दें। कायोत्सर्ग का प्रयोग, श्वास पर चित्त को केंद्रित करना आदि प्रयोगों से लेटना भी कुछ अधिक उपयोगी हो सकता है। बैठने के समय मुद्रा, रीढ़ की हड्डी, उचित विधि पर ध्यान दें। इस प्रकार हमारा हर व्यवहार धर्मयुक्त हो, ऐसा हमारा प्रयास रहना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आकाश में सैकड़ों सूरज-चंद्रमा उदित हो जाएँ और वे प्रकाश करें, किंतु वह प्रकाश गुरु द्वारा प्रदत्त प्रकाश के समक्ष सीमित होता है। जो प्रकाश हमें गुरु द्वारा प्राप्त होता है वैसा किसी के द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता। गुरु अज्ञान के अंधकार का नाश करने वाले, ज्ञान का प्रकाश करने वाले होते हैं। गुरु शिष्य की संभावनाओं को परखकर उसकी क्षमताओं को जागृत करते हैं। उसे शक्ति का बोध देते हैं, मार्गदर्शन करते हैं, उसके भाग्य को सँवारते हैं, विकास का चिंतन करते हैं, दूषित वृत्तियों को दूर करते हैं और चेतना को निर्मल बनाते हैं। हमें गुरु की आराधना करनी चाहिए, गुरु की दृष्टि के अनुसार अपनी दृष्टि का निर्माण कर लेना चाहिए, इंगित के अनुसार कार्य करना चाहिए और गुरु के चिंतन की क्रियान्विति कर स्वयं को धन्य बनाना चाहिए।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष भैरूलाल धाकड़ ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

ज्ञान प्राप्त हो जाने पर भी उसका घमंड न करो : आचार्यश्री महाश्रमण

सी वुड, ६ फरवरी, २०२४

ज्ञान, दर्शन और चारित्र प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः नेरूल के सी वुड क्षेत्र में पधारे। पूज्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। ज्ञान प्राप्ति के लिए विद्यार्थी कहाँ-कहाँ चले जाते हैं और ज्ञान प्राप्ति का अभ्यास करते हैं।

ज्ञान प्राप्ति में पाँच बाधक तत्त्व बताए गए हैं–अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग और आलस्य। मन में ज्ञान और ज्ञान प्रदाता के प्रति सम्मान का भाव होता है, अहंकार का भाव नहीं होता है, तो ज्ञान प्राप्ति में बाधा नहीं रहती। ज्ञान प्राप्त हो जाने पर भी उसका घमंड न करें, उसको और बढ़ाने का और दूसरों को ज्ञान बाँटने का प्रयास करें।

ज्ञान होने पर भी कम बोलना विशेष बात है। शक्ति होने पर भी सहिष्णुता, क्षमा रखना बड़ी बात है। त्याग या दान भी निष्काम भाव से हो। श्लाघा का प्रयास नहीं करना। गुस्सा, प्रमाद तथा विषयों में रचा-पचा रहना भी ज्ञान प्राप्ति में बाधा है। बीमारी और आलस्य भी ज्ञान प्राप्ति में बाधा है।

आज माघ कृष्णा चतुर्दशी, अमावस्या है। आज का दिन हमारे धर्मसंघ के तीसरे आचार्य श्री रायचंदजी स्वामी का महाप्रयाण दिवस है। उन्हें हम ऋषिराय भी कहते हैं। वे मेवाड़ रावलियाँ से थे। दो आचार्यों का सान्निध्य उन्हें प्राप्त हुआ था। छोटी उम्र में हमारे धर्मसंघ में दीक्षित, शिक्षित हो विकसित और जाते हैं, तो विशेष बात हो जाती है। सुदृढ़ नेतृत्व से संघ का विकास हो सकता है। उनके बाद सात पीढ़ियाँ बीत गई, आठवीं पीढ़ी प्रवर्धमान है। हम उनके जीवन से अध्यात्म की प्रेरणा लें।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित गीत के एक पद्य का संगान किया–

विनय शिरोमणि भारमल्ल रो, थांनै मिल्यो सहारो।
आओ देखो महाश्रमण रो, है बो ही उजियारो।।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में स्वागताध्यक्ष आनंद सोनी, कमलेश पटेल आदि ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

किशोर मंडल, तेरापंथ महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला की ओर अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। किशोर मंडल व ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने तेरापंथ के महोत्सव पर सामूहिक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

भगवान महावीर के कल्याणक महोत्सव का आयोजन

नई दिल्ली।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, दिल्ली द्वारा भगवान महावीर स्वामी के २५५०वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में कल्याणक महोत्सव का विज्ञान भवन में ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में दिगंबर समाज से आचार्य प्रज्ञा सागर जी, आचार्य सुनील सागरजी, स्थानकवासी संप्रदाय से डॉ० राजेंद्र मुनिजी, तेरापंथ धर्मसंघ से साध्वी अणिमाश्री जी, मंदिरमार्गी संप्रदाय से साध्वी प्रीति रत्नाश्री जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में आर०एस०एस० के प्रमुख सरसंघसंचालक मोहनराव भागवत उपस्थित थे।

आचार्य प्रज्ञा सागरजी ने कहा कि विश्व में दो तरह के रास्ते हैं–महाविनाश का एवं दूसरा महावीर का। महाविनाश विश्व की समस्या है और महावीर हर समस्या का समाधान। भगवान महावीर का धर्म व्यापक एवं व्यावहारिक है। इस धर्म में प्राचीनता है, वैज्ञानिकता, उदारता, नवीनता, व्यापकता एवं विशालता है। अहिंसा, अनेकता एवं परिग्रह के द्वारा देश में सुख, शांति, समृद्धि का वातावरण बन सकता है। भगवान महावीर का धर्म पशु को परमेश्वर, आत्मा को परमात्मा एवं भक्त को भगवान बना सकता है।

आचार्य सुनील सागरजी ने कहा कि भारत में दो तरह की संस्कृति है। श्रमण व वैदिक। दोनों ने मिल-जुलकर देश के उत्थान का काम किया है। भगवान महावीर ने कहा आग्रही नहीं सहिष्णु बनें। आग्रह पालने से परिवार, समाज व देश का नुकसान होगा। महावीर का एक सिद्धांत अनेकांत संपूर्ण देश को खुशहाल बना सकता है।

राजेंद्र मुनिजी ने कहा कि भगवान महवीर की शिक्षाओं को अमलीजामा पहनाएँ तो अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर अहिंसा, करुणा व प्रेम के अवतार थे। महापुरुषों की प्रलंब शृंखला में भगवान महावीर ही ऐसे महापुरुष हैं, जिन्होंने माँ के गर्भ में ही यह संकल्प कर लिया था कि मैं माँ-पिता की उपस्थिति में दीक्षा नहीं लूँगा। हम महावीर के अनुयायी हैं, उनके जीवन से प्रेरणा लें। हम महावीर को तो मानें ही किंतु महावीर की भी मानें तभी हमारे जीवन में आनंद की बहार आ सकती है।

साध्वी प्रीति रत्नाश्री जी ने कहा कि भगवान महावीर ने अहिंसा, अनेकांत व अपरिग्रह के वैभव से भारतीय संस्कृति को संपन्न बनाया है। भगवान महावीर का अहिंसा दर्शन बड़ा व्यापक है। जिसका मन हिंसा करने से दुखित होता है, वो वास्तव में हिंदू है। हम सिर्फ महावीर की पूजा स्तुति ही न करें, बल्कि उनके उपदेशों को जीवन में धारण करें।

मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख सरसंघ संचालक मोहन भागवत ने कहा कि शाश्वत सुख की खोज में इस देश की धरती पर दो धाराएँ विकसित हुई–श्रमण धारा एवं ब्राह्मण धारा। उन्होंने कहा–जड़ पदार्थों से जो सुख की प्राप्ति होती है, वह शाश्वत सुख नहीं है शाश्वत सुख का खजाना तो हमारे भीतर है और उस खजाने को हासिल करने की कला हमें भगवान महावीर ने सिखाई है।

भगवान महावीर मेमोरियल समिति के अध्यक्ष के०एल० जैन, भारत प्रांत कार्यवाह ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। इंदु जैन ने मंगल संगान एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रांत संघ संचालक ने किया। कार्यक्रम का संचालन अनील गुप्ता सह-प्रांत कार्यवाह ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में दिल्ली प्रांत के आर०एस०एस० कार्यकर्ताओं एवं दिल्ली सभा के अध्यक्ष एवं आर०एस० एस० की विद्या भारती स्कूल के अध्यक्ष सुखराज सेठिया का अत्यधिक श्रम मुखर हुआ।

✦ धन तुम्हारे अहंकार, विलास और मूर्च्छा का कारण न बने। यह सोचो, वह परोपकार का साधन कैसे बन सकता है ?
आचार्य श्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन

कोयंबटूर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं ने 'अनमोल रिश्ता सास-बहू का' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। नमस्कार महामंत्र व समताल श्वास प्रेक्षा के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका सुशीला बाफना ने की। कनक बुच्चा ने मंगलाचरण किया। स्थानीय मंडल की अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत किया। मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत का संगान किया।

इस कार्यशाला की मुख्य वक्ता भावना दुबे ने रिश्ते के बारे में समझाया।

पहले जुड़िए फिर एक-दूसरे की सुनिए फिर करेक्ट कीजिए। कुछ भी बोलने से पहले सोचें। सास-बहू दोनों में दोस्ती हो, एक-दूसरे को समझने का प्रयास हो।

आभार ज्ञापन मंत्री सुमन सुराणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष व उपासिका सुशीला बाफना ने किया। कार्यक्रम में १३ सास-बहू की जोड़ियों ने भाग लिया। दो जोड़ियों को पुरस्कृत किया गया। इनके निर्णायक मुख्य वक्ता भावना दुबे थी। कार्यक्रम में लगभग ६५ बहनों की उपस्थिति रही।

जयपुर शहर।

अभातेममं द्वारा निर्देशित कार्यक्रम के अंतर्गत, तेममं द्वारा सास-बहू कार्यशाला का आयोजन अणुविभा केंद्र में 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में किया गया। भगवान महावीर के २५५०वें परिनिर्वाण कल्याणक वर्ष पर साध्वीश्री जी ने भगवान महावीर के दर्शन के पारिवारिक सूत्रों के बारे में बताया कि हर व्यक्ति में सभी गुण नहीं होते, मगर हर व्यक्ति में कुछ ना कुछ विशेष गुण होते हैं। परिस्थितियों में, देखने के नजरिए में फर्क होता है, समय के साथ बदलाव जरूरी है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की सदस्य प्रीति घीया के मंगलाचरण के साथ किया गया। महिला मंडल की अध्यक्ष नीरू मेहता द्वारा स्वागत किया गया। कविता के माध्यम से सास-बहू के रिश्ते पर प्रकाश डाला। महिला मंडल की बहनों द्वारा लघु नाटिका 'सास-बहू के रिश्ते' का मंचन किया गया। जिसमें बहनों ने बताया कि दूसरों की बात में आकर मन में दुर्भाव नहीं लाना चाहिए। विवेक व समझदारी से घर को स्वर्ग बनाया जा सकता है।

मुख्य वक्ता अभातेममं की पूर्व अध्यक्ष पुष्पा बैद ने बताया कि सास-बहू में आपसी समझ होनी चाहिए। मतभेद हो सकते हैं, पर मनभेद नहीं रखना चाहिए। व्यवहार में समता व सहिष्णुता रखें, बड़ों को बड़प्पन रखना चाहिए। बहू को हर बात पीहर में नहीं बतानी चाहिए। निंदा, विवाद, कटाक्ष व शिकायत ना करें। कार्यक्रम में १० जोड़ों ने सहभागिता की। रोचक सवाल-जवाब किए गए। कई तरह के गेम खिलाए गए। जोड़ियों को विभिन्न कैटेगरी में पुरस्कृत किया गया। प्रथम, द्वितीय को पुरस्कृत किया गया। सभी को सांत्वना पुरस्कार दिए गए। अभातेममं की ट्रस्टी विमला दुगड़, शहर महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष डॉ० कांता छाजेड़ की उपस्थिति रही।मंत्री नीलिमा बैद ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन निधि लोढ़ा व प्रीति घीया ने किया।

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के अंतर्गत महिला मंडल ने 'सास-बहू का अनमोल रिश्ता' कार्यशाला मुनि सुव्रतकुमार जी के सान्निध्य में आयोजित की गई। मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र के द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। उपासिका मंजू गेलडा द्वारा प्रेक्षाध्यान करवाया गया। अध्यक्ष लक्ष्मी सिसोदिया ने अपना स्वागत वक्तव्य दिया।

मुनिश्री ने प्रेरणा पाथेय में समझाया कि सास को सास ना समझें, बल्कि सांस समझें और समझाया कि सास बहू किस तरह से परिवार में अपना तालमेल बनाए रखें। मुख्य वक्ता के रूप में जोनल ट्रेनर सुरभि चंडालिया ने अपनी एक्टिविटी के द्वारा सास-बहू के रिश्ते को एक नई दिशा दिखाई। जो सास-बहू की जोड़ी १० साल तक एक साथ रह चुकी हो या रह रही हो उनका सम्मान किया गया। अंत में ललिता बाफना और आरती दुगड़ द्वारा एक मनोरंजन गेम खिलाया गया। ४० बहनों की उपस्थिति रही। जिसमें सास-बहू की १५ जोड़ी ने उत्साहपूर्ण कार्यक्रम में भाग लिया। मंच का संचालन मंत्री वंदना पगारिया ने किया।

कैंसर जागरूकता सेमिनार का आयोजन

सुजानगढ़।

अभातेममं द्वारा निर्देशित 'कैंसर जागरूकता सेमिनार' का आयोजन गांधी बालिका विद्यालय, सुजानगढ़ में किया गया। सर्वप्रथम महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रेरणा गीत द्वारा किया गया। विद्यालय की प्रिंसिपल ललिता भोजक ने छात्राओं को कैंसर के बारे में जानकारी दी। डॉ० योगिता सक्सेना ने कैंसर के बारे में बताया कि हमें बचना चाहिए और हमें कैसे जागरूक रहना चाहिए। उन्होंने बताया कि जंक फूड नहीं खाना चाहिए और अपने स्वास्थ्य के लिए हमें व्यायाम अवश्य करना चाहिए।

नियमित रूप से जाँच करवाई जानी चाहिए। ताकि हम इस बीमारी से अपना बचाव कर सकें। आभार ज्ञापन महिला मंडल अध्यक्ष राजकुमारी भूतोड़िया ने किया। लगभग ४५ बालिकाओं की उपस्थिति रही।

निर्माण : बढ़ते कदम विकास की ओर

टिटिलागढ़।

अभातेममं के निर्देशानुसार निर्माण : बढ़ते कदम विकास की ओर (विद्यालय संरक्षण) कार्यक्रम के अंतर्गत तेममं, टिटिलागढ़ की बहनें स्पोर्ट्स समान के साथ स्थानीय शासकीय गर्ल्स हाई स्कूल पहुँची। शिक्षिकाओं एवं छात्राओं के साथ कार्यक्रम आयोजित किया। सर्वप्रथम महिला मंडल की बहनों ने छात्राओं के साथ मिलकर अणुव्रत गीत का संगान किया।

अध्यक्ष बॉबी जैन ने कहा कि जिस तरह जीवन में पढ़ाई जरूरी है, शरीर को स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद भी बहुत जरूरी है। अध्यक्षा ने छात्राओं से साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने की प्रेरणा दी। बहनों ने स्कूल की साफ-सफाई की व्यवस्था की जानकारी ली। छात्राओं को स्पोर्ट्स के समान वितरित किए गए। महिला मंडल की बहनों ने एनएसी ऑफिस में जाकर स्कूल के नियमित व निःशुल्क साफ-सफाई के लिए आवेदन किया।

महिला मंडल द्वारा संगोष्ठी का आयोजन

कोयंबटूर।

नवयुवतियों को मंडल में आगे लाकर उनकी प्रतिभाओं और रुचि को ध्यान में रखते हुए एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। तत्पश्चात युवतियों ने प्रेरणा गीत का संगान किया। दो मिनट सही श्वास प्रक्रिया का अभ्यास व सामूहिक मंगलभावना का समोच्चारण करवाया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य अलग-अलग धर्म संप्रदाय से आई बहुएँ या तेरापंथी होते हुए भी जानकारी नहीं है, उन्हें धर्मसंघ की मर्यादाओं व अभातेममं की गतिविधियों व संचालित परियोजनाओं से अवगत करवाना था।

युवतियों के चार ग्रुप बनाए व प्रत्येक ग्रुप को ऑन द स्पॉट विषय देकर लघु नाटिका प्रस्तुत करने को कहा। प्रत्येक सदस्य ने बढ़-चढ़कर इसमें भाग लिया। संगोष्ठी में मंडल की बहनों के साथ २८ नवयुवतियों की उपस्थिति रही और युवतियों ने कहा कि अभातेममं निर्देशित कार्यक्रमों में गणवेश में आएँ। इस संगोष्ठी की रूपरेखा से लेकर संचालन पूर्वाध्यक्ष मधु बांठिया ने किया। स्थानीय अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत करते हुए प्रेरणा दी कि भविष्य में इसी तरह हर कार्यक्रम में जुड़ना है। कार्यक्रम की व्यवस्था में मंत्री सुमन सुराणा व कार्यकारिणी सदस्य सीमा चोरड़िया का सहयोग रहा।

ज्ञानशाला संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

जोबनेर।

शासनश्री साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के बच्चों का पाँच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें १५ बच्चों की सहभागिता रही। इस शिविर में साध्वी मधुरेखा जी ने बच्चों को ज्ञानवर्धक बातें बताई। जीवन निर्माण की दृष्टि से कुछ संकल्प करवाए।

साध्वी मधुयशा जी ने बच्चों को आसन, प्राणायाम, मुद्राओं का प्रयोग और कुछ आध्यात्मिक गेम्स करवाए। शिविर का शुभारंभ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुआ। रक्षित बरड़िया ने शिविर के अनुभव बताए। बच्चों ने रोचक कव्वाली और संवाद प्रस्तुत किया। समागत मेडिकल कॉलेज के लेक्चरार पंकज ने अपने विचार व्यक्त किए।

अभातेयुप जैन तेरापंथ न्यूज के नवरतन बरड़िया ने आभार ज्ञापन किया तथा सभी बच्चों को पुरस्कृत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मधुयशा जी ने किया। भाई-बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही।

--: संक्षिप्त समाचार :--

सेवा कार्य

हनुमंतनगर।

अमृता शिशु निवास बसवनगुडी के लगभग ६० बच्चों हेतु तेयुप, हनुमंतनगर द्वारा सेवा कार्य किया गया। प्रायोजक परिवार प्रेमचंद नितिन, मनीष हिरावत, रतननगर-बैंगलुरु का जैन पट्ट से सम्मान किया गया।

हैदराबाद।

तेयुप द्वारा गांधी हॉस्पिटल, सिकंदराबाद में रात्रि विश्राम करने वाले राहगीरों हेतु सेवा कार्य किया गया।

कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़, उपाध्यक्ष पीयूष बरड़िया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

टॉलीगंज।

तेयुप, टॉलीगंज ने लाइटहाउस ब्लाइंड स्कूल में ६० से अधिक बच्चों को जरूरत की सामग्री का वितरण कर सेवा कार्य किया। परिषद के मंत्री राहुल सिंघी ने सभी का स्वागत किया। प्रायोजक रणजीत राहुल सिंघी परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ।

मर्यादा महोत्सव पर विशेष

आज देश को जरूरत है मर्यादा और निष्ठा की

❑ साध्वी प्रशस्तप्रभा ❑

आज के इस उच्छृंखल व अनुशासनहीन युग में अक्सर सुनने को मिलता है–'नियम तो बनाए ही जाते हैं, तोड़ने के लिए'। आमतौर पर देखने को भी मिलता है, एक व्यक्ति सिग्नल तोड़ता है और पीछे-पीछे कई आगे बढ़ जाते हैं। सड़क के किनारे पर रखे कूड़ेदान खाली पड़े हैं और सड़क पर बेझिझक कूड़ा फेंका जा रहा है। आसपास लिखे गए दिशा-निर्देशों का पालन तो दूर, ज्यादातर लोग तो उसे पढ़ते ही नहीं। और तो और भारतीय लोग जब कभी विलंब से पहुँचते हैं, तो 'इंडियन स्टैंडर्ड टाइम' कहकर व्यंग्य और मजाक में ही सही, खुद को वाजिब ठहराने का प्रयास करते हैं। यह आज एक प्रवृत्ति हो गई है। यही अनुशासनहीनता एक दिन परिवार, समाज व देश के सामने संकट की स्थिति उत्पन्न कर देती है।

प्रश्न उपस्थित होता है आखिर लोग नियमों पर अमल क्यों नहीं करते? क्यों अनुशासनहीनता आज एक ज्वलंत समस्या के रूप में उभर रही है। लगता है व्यक्ति को अनुशासनहीन बनाने में उसकी मानसिकता निमित्त बनती है। वातावरण का भी प्रभाव होता है। एक बच्चा बड़ा (व्यस्क) होने तक सैकड़ों-हजारों बार यहाँ कोई नियम-कानून नहीं है, कहीं कोई सुनवाई नहीं होती, सब पैसों का खेल है, भ्रष्टाचारी तो मजे में हैं जैसे वाक्य सुन लेता है। दूरदर्शन, सिनेमा व समाचार पत्रों के माध्यम से आए दिन यही ज्ञान व संस्कार परोसा जा रहा है। नियम तोड़ने पर सजा न मिलना भी नियमों की अवहेलना को बढ़ा रहा है।

कभी-कभार व्यक्ति निष्ठापूर्वक तो नहीं, लेकिन दंड, सजा आदि के डर से नियमों का पालन भी कर लेता है। जैसे, चौराहे पर जो लोग ट्रैफिक लाइट की अनदेखी कर आगे बढ़ते हैं, वही लोग सिपाही को देखकर रुकते भी हैं। अपनी सलामती के लिए नहीं ही सही, व्यक्ति जुर्माने से बचने के लिए कई बार हेलमेट पहनता है। कुछ भारतीय भारत में तो नहीं, लेकिन विदेशों में नियमों का बाकायदा पालन करते हैं, क्योंकि सब ऐसा कर रहे होते हैं, साथ ही नियम के उल्लंघन का दंड भी भारी भरकम होता है।

लेकिन इस प्रकार डर से नियमों का पालन करना ज्यादा फायदेमंद नहीं है। नियमों का निष्ठा से पालन करने के लिए लोगों को यह अहसास कराना जरूरी है कि ये नियम हमारे सुरक्षा कवच हैं। ये नियम हमारे जीवन को संवारने वाले हैं। ये हमारी सुविधा और सहयोग के लिए हैं। और जब यह नियम निष्ठा जग जाएगी, फिर चाहे कोई देखे या न देखे, कोई दंड मिले या ना मिले, व्यक्ति आत्म साक्षी से नियमों का पालन करेगा।

इस नियम निष्ठा के परिप्रेक्ष्य में यदि अवलोकन किया जाए तो जीता-जागता उदाहरण है–तेरापंथ धर्मसघ। यह एक मर्यादित व अनुशासित धर्मसंघ है। स्वतंत्रता के इस युग में, जहाँ मर्यादा को तोड़ना ही महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है, जहाँ स्वतंत्र रूप से काम बनने का मनोभाव बढ़ रहा है, वहाँ इस धर्मसंघ में सैकड़ों-लाखों लोगों की बागड़ोर एक आचार्य के हाथ में रहती है। एक आचार्य का नेतृत्व सबको मान्य होता है। आचार्य स्वयं मर्यादित रहते हुए संघ को मर्यादित रखते हैं। जहाँ मर्यादा का अतिक्रमण होता है, वहाँ जागरूकता के साथ उसे रोकते हैं। साधु-साध्वियों को मर्यादा, अनुशासन, विनय, सेवा व समर्पण के संस्कार दीक्षित होते ही जन्मघुट्टी के रूप में दिए जाते हैं और साधु-साध्वियाँ भी किसी दबाव से नहीं, बल्कि पूर्ण निष्ठा के साथ आचार्य के आज्ञा-निर्देश का पालन करते हैं। क्योंकि उनको प्रारंभ से ही मनोवैज्ञानिक तरीके से इस प्रकार के आध्यात्मिक संस्कार दिए जाते हैं कि मर्यादाओं का उल्लंघन करना दूसरों के लिए नहीं, लेकिन स्वयं के लिए हानिकारक है। यहाँ मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाला कभी सम्मान प्राप्त नहीं करता। कई बार तो उल्लंघन करने वालों का संघ से संबंध-विच्छेद भी कर दिया जाता है। और जो मर्यादा का निष्ठा से पालन करता है, उसे समय-समय पर पुरस्कृत व सम्मानित किया जाता है। इन्हीं मर्यादाओं के कारण यह धर्मसंघ आज २६३ वर्ष बाद भी एकसूत्र के धागे में बँधा हुआ है। एक गुरु और एक संविधान इस धर्मसंघ की पहचान बनी हुई है और इस तेरापंथ धर्मसंघ के प्राणतत्त्व हैं–मर्यादा निष्ठा, अनुशासित जीवनशैली, एक आचार्य का नेतृत्व व एक संविधान।

इस मर्यादा निष्ठा को और अधिक सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए यहाँ प्रतिवर्ष मनाया जाता है मर्यादा महोत्सव। मर्यादा महोत्सव महान सांस्कृतिक कार्यक्रम है। यह विश्व भर के पर्वों, उत्सवों और त्योहारों में एक विलक्षण महोत्सव है। इस महोत्सव में संघीय व शास्त्रीय मर्यादाओं की जानकारी दी जाती है। समय-समय पर मर्यादाओं में परिवर्तन, परिशोधन व परिवर्धन होता रहता है। यह महोत्सव संघ के प्रत्येक सदस्य में नई प्रेरणा, नई ऊर्जा व नए उत्साह का संचार करता है। इसमें यहाँ केवल साधु-साध्वियों में ही नहीं, श्रावक समुदाय में भी मर्यादा, अनुशासन व संघीय संस्कार कूट-कूटकर भरे जाते हैं। आस्था और आचरण को पवित्र व पुष्ट करने की प्रेरणा मिलती है। ताकि संघ के प्रत्येक सदस्य की मर्यादा निष्ठा उत्तरोत्तर बढ़ती रहे।

इस महोत्सव को देखने के लिए हजारों लोग एकत्रित होते हैं। कभी-कभी यह संख्या पचास-साठ हजार तक भी चली जाती है। इतने लोगों की भीड़, इतने कार्यक्रम पर व्यवस्था के लिए कभी पुलिस की आवश्यकता नहीं होती। क्योंकि यहाँ सब स्वयं अनुशासित है। अस्तु! काश इस मर्यादा महोत्सव से प्रेरणा लेकर सरकार द्वारा भी मनोवैज्ञानिक तरीके से, जागरूकता अभियान चलाकर प्रत्येक देशवासी में नियम पालन के प्रति ऐसी निष्ठा जगाई जाए कि देश का हर व्यक्ति अपने जीवन की मर्यादाओं का, अपनी परंपराओं का, अपनी संस्कृति का मूल्यांकन करे, उन्हें सुरक्षित व विकसित करने का प्रयास करे तो समूचे देश का बहुत बड़ा हित हो सकता है।

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

अमित सिंघवी सुपुत्र अशोक सिंघवी के नए घर का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक डालिमचंद नौलखा, अरुण बैद एवं पंकज डांगी ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। अशोक सिंघवी ने परिवार की तरफ से आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना, संगठन मंत्री आकाश भंसाली, तेयुप सदस्य एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने शुभकामना संप्रेषित की।

भूमि पूजन

उदयपुर।

बसंत, नरेंद्र पोरवाल के स्कूल के नवीन परिसर के निर्माण हेतु भूमि पूजन का कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़ ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप, उदयपुर द्वारा मंगलभावना पत्र भेंट किया गया। तेयुप के मंत्री भूपेश खिमेसरा ने आभार ज्ञापन किया।

गंगाशहर।

गंगाशहर निवासी संतोष देवी छाजेड़ के नूतन मकान हेतु भूमि पूजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक विनीत बोथरा, देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया। इस अवसर पर पारिवारिकजन और समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

हैदराबाद।

तुलसी महाप्रज्ञ वेल्फेयर ट्रस्ट के नूतन भवन का भूमि पूजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित लुनिया, जिनेंद्र बैद द्वारा मंगलभावना यंत्र की स्थापना कर एवं विधि-विधानपूर्वक कार्यक्रम संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने पधारे हुए सभी लोगों का स्वागत किया।

पाणिग्रहण संस्कार

राजाजीनगर।

मैसूर निवासी महावीरचंद बोहरा के सुपुत्र आशीष कुमार बोहरा एवं पेरनामबुट निवासी अनिल कुमार कांकरिया की सुपुत्री निकिता जैन का विवाह जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश देरासरिया, सतीश पोरवाड़ एवं रनीत कोठारी ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने नवविवाहित दंपत्ति को शुभकामनाएँ प्रेषित की। परिषद द्वारा प्रमाण पत्र एवं मंगलभावना यंत्र वर-वधू पक्ष को प्रदान किया गया। इस अवसर पर निवर्तमान अध्यक्ष अरविंद गन्ना एवं जैन संस्कार विधि संयोजक सुनील सिंघवी की उपस्थिति रही।

हैदराबाद।

नीतू सुपुत्री नवीन जैन मखाना (हाजीवास) का शुभ विवाह वैभव जैन सुपुत्र सुरेंद्र कुमार जैन (पिपारा) के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक ललित लुनिया, राहुल गोलछा एवं जिनेंद्र बैद ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

परिषद द्वारा मंगलभावना यंत्र के साथ सर्टिफिकेट भेंट किया गया। दोनों परिवार की तरफ से संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया गया।

✦ ज्ञान एक ऐसा तत्त्व है, जो प्रकाश करने वाला होता है।
आचार्य श्री महाश्रमण

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

बारह भावनाएँ

(पिछला शेष) जड़ में भी यही परिवर्तन मिलता है। मिट्टी के अनेक आकार बनते हैं और बिगड़ते हैं। सोने की कितनी अवस्थाएँ होती हैं। लेकिन स्वर्णत्व सब में वैसा ही रहता है। एक व्यक्ति सोने का घड़ा लेना चाहता है, एक व्यक्ति मुकुट और एक व्यक्ति केवल सुवर्ण। सोने का घड़ा बनने पर एक को प्रसन्नता होती है और मुकुटवाले को विषाद। लेकिन सुवर्णवाले व्यक्ति को न प्रसन्नता है, न विषाद। स्वर्ण ध्रौव्य है। घट और मुकुट उनकी अवस्थाएँ हैं। पुद्गल–जड़ के गुण किसी भी दशा में मिटते नहीं। मिट्टी भले सोने के रूप में परिणत हो जाए, शरीर चिता में जलकर राख भी क्यों न बन जाए, इन सबमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श–ये सदा अवस्थित रहेंगे। एक परमाणु से लेकर अनंत परमाणुओं के स्कंध में भी इनकी अवस्थिति है।

संसार की अपेक्षा से मुक्त होने वाले जीव कम हो जाते हैं। वे अपने परमात्म-स्वरूप को पाकर जन्म और मृत्यु के घर को लाँघ जाते हैं। किंतु इससे आत्मा की संख्या में कोई कमी नहीं होती। आत्मत्व यहाँ और वहाँ सतत विद्यमान रहता है। संसारी आत्माएँ अनंत हैं और मुक्त आत्माएँ भी अनंत हैं। मुक्त जीवों की अपेक्षा संसारी जीव सदा अनंत रहे हैं और रहेंगे। संसार कभी शून्य नहीं होगा। मुक्ति जाने के योग्य जीव भी सदा यहाँ मिलते रहेंगे।

श्राविका जयंती के प्रश्न से इनका स्पष्ट हल सामने आ जाता है। जयंती ने भगवान् महावीर ने पूछा–'भगवन्! क्या सभी जीव मुक्त हो जाएँगे? यदि सभी मुक्त हो जाएँगे तो संसार जीवशून्य हो जाएगा।' भगवान् ने कहा–'ऐसा नहीं होता। मोक्ष में वे ही जीव जाते हैं, जो भव्य होते हैं। इससे एक प्रश्न और पैदा हो जाता है कि भव्य जीव सब मोक्ष में चले जाएँगे, तो क्या संसार भव्य-शून्य नहीं हो जाएगा?' लेकिन वैसी अनुकूल स्थिति उत्पन्न होने पर ऐसा होता है। सबको ऐसे अवसर सुलभ नहीं हो।'

मेघः प्राह

(८३) कथं चित्तं न जानाति? कथं जानन् न चेष्टते?
चेष्टमानं कथं नैति, श्रद्धानं चरणं विभो।।

मेघ बोला–प्रभो! चित्त क्यों नहीं जानता? जानता हुआ उद्योग क्यों नहीं करता? उद्योग करता हुआ भी वह श्रद्धा और चारित्र को क्यों नहीं प्राप्त होता?

आत्मा ज्ञानमय है। मन को सब कुछ बोध होना चाहिए। उसके लिए यह अज्ञेय क्यों है कि वह कहाँ से आया है? कहाँ जाएगा? भविष्य की घटनाएँ क्यों अज्ञात रहती हैं? मेघ के मन में ये ही कुछ आशंकाएँ हैं। ज्ञान की पूर्णता, श्रद्धा और आचरण के विकास में कौन बाधक है?

भगवान् प्राह

(८४) आवृतं नहि जानाति, प्रतिहतं न चेष्टते।
मूढं विकारमाप्नोति, श्रद्धायां चरणेऽपि च।।

भगवान् ने कहा–जो चित्त आवृत्त होता है, वह नहीं जानता। जो चित्त प्रतिहत होता है, वह उद्योग नहीं करता। जो चित्त मूढ होता है, वह श्रद्धा और चारित्र को प्राप्त नहीं होता।

मेघः प्राह

(८५) केन स्यादावृत्तं चित्तं? केन प्रतिहतं भवेत्?
मूढं च जायते केन? ज्ञातुमिच्छामि सर्ववित्!

मेघ बोला–हे सर्वज्ञ! चित्त किससे आवृत होता है? किससे प्रतिहत होता है? और किससे मूढ बनता है? यह मैं जानना चाहता हूँ।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

मैं अनुभव करता हूँ कि यह मेरा जन्म हिंसा का प्रायश्चित्त करने के लिए ही हुआ है। मेरी सारी रुचि, सारी श्रद्धा, सारी भावना अहिंसा की आराधना में लग रही है। उसके लिए मैं जो कुछ भी कर सकता हूँ, करूँगा। मेरे प्राण तड़प रहे हैं उसकी सिद्धि के लिए। मैं चाहता हूँ कि वह दिन शीघ्र आए जिस दिन मैं अहिंसा से अभिन्न हो जाऊँ, किसी जीव को कष्ट न पहुँचाऊँ। आज क्या हो रहा है? हम बड़े लोग हैं छोटे लोगों के प्रति सद्व्यवहार नहीं करते। उनकी विवशता का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं। पशु की तरह उनका क्रय-विक्रय करते हैं। उनके साथ कठोरता बरतते हैं। मुझे लगता है जैसे हमने मानवीय एकता को समझा ही नहीं। छोटा-सा अपराध होने पर कठोर दंड दे देते हैं। नाना प्रकार की यातनाएँ देना छोटी बात है। अवयवों को काट डालना भी हमारे लिए बड़ी बात नहीं है। मनुष्य के प्रति हमारा व्यवहार ऐसा है, तब पशुओं के प्रति अच्छे होने की आशा कैसे की जा सकती है? मैं इस स्थिति को बदलना चाहता हूँ। यह डंडे के बल पर नहीं बदली जा सकती है? यह बदली जा सकती है हृदय-परिवर्तन के द्वारा। यह बदली जा सकती है प्रेम की व्यापकता के द्वारा। इसके लिए मुझे हर आत्मा के साथ आत्मीय संबंध स्थापित करना होगा। समता की वेदी पर अपने अहं का विसर्जन करना होगा। यह कार्य माँगता है बहुत बड़ा बलिदान, बहुत बड़ी साधना और बहुत बड़ा त्याग।'

माता-पिता की समाधि-मृत्यु

महावीर के मन में अचानक उदासी छा गई, जैसे उज्ज्वल प्रकार के बाद नीले नभ में अकस्मात् रात उतर आती है। वे कारण की खोज में लग गए। वह पूर्वसूचना थी महाराज सिद्धार्थ और देवी त्रिशला के देहत्याग की। कुमार के मन में अंतःप्रेरणा जागी। वे तत्काल सिद्धार्थ के निसद्या-कक्ष में गए। वहाँ सिद्धार्थ और त्रिशला–दोनों विचार-विमर्श कर रहे थे। कुमार ने देखा, वे किसी गंभीर विषय पर बात कर रहे हैं इसलिए उनके पैर द्वार पर ही रुक गए। सिद्धार्थ ने कुमार को देखा और अपने पास बुला लिया। वे बोले, 'कुमार! तुम ठीक समय पर आए हो। हमें तुम्हारे परामर्श की जरूरत थी। हम तुम्हें बुलाने वाले ही थे।'

कुमार ने प्रणाम कर कहा, 'मैं आपकी कृपा के लिए आभारी हूँ। आप आदेश दें, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?'

'कुमार! तुम देख रहे हो, हमारी अवस्था परिपक्व हो गई है। पता नहीं कब मृत्यु का आमंत्रण आ जाए। वह हमें निमंत्रण दे, इससे पहले हम उसे निमंत्रण दें, क्या यह अच्छा नहीं होगा? श्रमण-परंपरा ने मृत्यु को आमंत्रित करने में सदा शौर्य का परिचय दिया है। भगवान् पार्श्व ने मृत्यु की तैयारी करने का पाठ पढ़ाया है। हम अनुभव करते हैं कि उस पाठ को क्रियान्वित करने का उचित अवसर हमारे सामने उपस्थित है।'

कुमार का मन इस आकस्मिक चर्चा से द्रवित हो गया। माता-पिता का वियोग उनके लिए असह्य था। वे बोले, 'पिताश्री! इस प्रकार की बात सुनना मुझे पसंद नहीं है।'

'कुमार! यह पसंद और नापसंद का प्रश्न नहीं है। यह प्रश्न है यथार्थ का। जो होना है, वह होगा ही। उसको रोका नहीं जा सकता। फिर उसे नकारने का अर्थ क्या होगा?'

'पिताश्री! इस सत्य को मैं जानता हूँ। पर सत्य का सूर्य क्या मोह के बादलों से आच्छन्न नहीं होता? मैं आपकी मृत्यु का नाम भी सुनना नहीं चाहता। फिर मैं उसकी तैयारी का परामर्श कैसे दे सकता हूँ?'

'कुमार! तुम तत्त्वदर्शी हो, सत्य के गवेषक हो, अभय हो, सब कुछ हो। पर पितृस्नेह और मातृस्नेह से मुक्त नहीं हो। क्या इस दुर्बलता से ऊपर नहीं उठना है?'

'पिताश्री! मैं आप और माँ के स्नेह से अभिभूत हूँ। इसे आप दुर्बलता समझें या कुछ भी समझें।'

सिद्धार्थ ने वार्ता को मोड़ देते हुए कहा, 'क्या तुम नहीं चाहते कि हमारी समाधि-मृत्यु हो?'

'यह कैसे हो सकता है?'

'क्या इसके लिए हमें शरीर और मन को पूर्णरूपेण तैयार नहीं करना चाहिए।'

कुमार ने साहस बटोरकर कहा, 'अवश्य करना चाहिए।'

'इस तैयारी में तुम सहयोगी बनोगे?'

'आपकी प्रबल इच्छा है, वह कार्य मुझे करना ही होगा।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

करणी बांझ न होय

संसार (जीव जगत्) की विचित्रता का आधार व कारण कर्म है। कर्म का कारण आश्रव है। इसलिए संसार की विचित्रता का मूल आधार आश्रव है। मिथ्यात्व आदि चार आश्रव और अशुभ योग आश्रव तो दुःख-हेतु हैं ही। शुभयोग आश्रव को सीधा दुःखहेतु नहीं कहा जा सकता, किंतु जब तक वह रहता है, पूर्ण दुःख-मुक्ति नहीं हो सकती। शुभयोग से अशुभ कर्म निर्जरण तथा शुभकर्म आश्रवण–ये दो कार्य होते हैं। निर्जरण अपने आपमें सुख है, सुख का मार्ग है।

विशुद्ध (केवल) योग में बंधन की दीर्घकालिकता व अनुभागतीव्रता की क्षमता नहीं होती। उसके साथ परिणाम जुड़ता है, उसके आधार पर निष्पत्ति आती है। एक समान क्रिया की, दृष्टिकोण और परिणाम की भिन्नता के कारण, निष्पत्ति भिन्न-भिन्न प्रकार की हो जाती है। दो व्यक्ति ध्यानस्थ बैठे हैं। बाहर से दोनों समान अनुष्ठान में संलग्न हैं, परंतु एक मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ रहा है और एक बंधन की दिशा में। एक के मन में कर्मनिर्जरा का भाव है, दूसरे के मन में दिखावे की भावना है।

दो व्यक्ति साधुओं के स्थान पर एक साथ जा रहे हैं। गतिक्रिया दोनों की समान है। एक संयमयुक्त चल रहा है, उसका उद्देश्य है साधुओं का प्रवचन-श्रवण। दूसरा असंयम से चल रहा है, उसका उद्देश्य है साधुओं के स्थान पर आने वाले दर्शनार्थियों के जूतों को चुराना। अब तक पहले ने प्रवचन नहीं सुना है, दूसरे ने जूतों को चुराया नहीं है। दोनों चल रहे हैं। फिर भी एक कर्मनिर्जरा कर रहा है और दूसरा पापकर्मबंधन कर रहा है। एक ही व्यक्ति एक ही क्रिया में स्थित है, किंतु परिणामों की भिन्नता के कारण कभी वह पाप कर्म बाँध लेता है और कभी कर्मों को क्षीण कर देता है।

राजर्षि प्रसन्नचंद्र साधना में लीन थे। परंतु भावों से युद्धस्थल में पहुँच गए, हिंसा के संस्कार सक्रिय हो गए, वे नरक में जाने के योग्य बन गए। परिणामों की दिशा बदली, हिंसा से अहिंसा व संयम के भावों में स्थित हुए, वहीं उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो गया। शरीर से साधना में स्थित थे। परंतु परिणाम की भिन्नता ने भिन्न-भिन्न निष्पत्ति ला दी। दृष्टिकोण का मिथ्यात्व और दूषित परिणाम व्यक्ति को भटकाते हैं।

आश्रव को कर्मकर्त्ता माना गया है। नव तत्त्वों में एक आश्रव तत्त्व ही कर्मों का कर्त्ता है। कर्मों का कर्त्ता छह द्रव्यों में जीव और नव तत्त्वों में जीव तथा आश्रव माना गया है। यहाँ जीव को कर्मकर्त्ता के रूप में स्वीकार किया गया है, वह जीव का आश्रवात्मक परिणाम ही है, उससे भिन्न और कुछ नहीं है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आश्रव ही कर्मकर्त्ता है। कर्म का अकर्त्ता छह द्रव्यों में कौन और नौ तत्त्वों में कौन? इस प्रश्न का उत्तर दिया गया है कि कर्म का अकर्त्ता छह द्रव्यों में छहों तथा नौ तत्त्वों में आठ तत्त्व आश्रव को छोड़कर।

आचार्य भिक्षु ने 'तेरहद्वार' में आश्रव और कर्म की भिन्नता को स्पष्ट किया है। कर्म आगंतुक है और आश्रव आगमन-मार्ग है। मकान का द्वार अलग है और आगंतुक मनुष्य अलग है। ठीक इसी प्रकार कर्म अलग है और आश्रव अलग है।

एक व्यक्ति जीव-हिंसा करता है। उसके पाप कर्म का बंधन होता है। यहाँ तीन तथ्य हैं। जिस कर्म के उदय से व्यक्ति जीव-हिंसा में प्रवृत्त होता है, उस कारणभूत कर्म को 'प्राणातिपातपापस्थान' कहा जाता है। जीव को मारता है, वह मारना प्राणातिपात क्रिया है, प्राणातिपात आश्रव है, उससे जो पाप कर्म का बंध होता है, वह प्राणातिपात पाप-बंध है।

साधना का विकास-क्रम है आश्रव से अनाश्रव की दिशा में प्रस्थान। ज्यों-ज्यों व्यक्ति आश्रवमुक्त बनता है, त्यों-त्यों वह दुःख के मूल को खत्म कर डालता है।

(५) संवरो मोक्षकारणम्

जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ जैन दर्शन ईश्वर को नियन्ता अथवा सृष्टि के कर्ता-हर्ता के रूप में स्वीकार नहीं करता। हमारे सुख-दुःख के जिम्मेदार के रूप में भी वहाँ ईश्वर को नहीं माना गया है। नियन्ता को न मानने पर भी जैन दर्शन नियति (सार्वभौम, सार्वकालिक अटल नियम) को किसी सीमा तक अवश्य मान्य करता है। नियति को सर्वथा छोड़कर जीवन और जगत् की व्याख्या नहीं की जा सकती। आत्म-कर्तृत्व की भी सीमा है। कुछ ऐसे पहलु भी हैं जहाँ आत्मकर्तृत्व का सिद्धांत लागू नहीं होता। एक जीव जीव है, क्यों? वह अजीव क्यों नहीं? एक अजीव पदार्थ अजीव है, क्यों? वह जीव क्यों नहीं? इस 'क्यों' का उत्तर यही हो सकता है कि यही नियति है, प्रकृति है, प्रारिणामिक भाव है। भव्य अभव्य की स्थिति में भी किसी आत्मकर्तृत्व का हाथ नहीं है। यह सारा विशुद्ध नियति अथवा पारिणामिक भाव का क्षेत्र है। धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का अस्तित्व भी पारिणामिक भाव है। उन द्रव्यों को प्रवृद्ध और नष्ट नहीं किया जा सकता।

छह द्रव्यों में आत्मा (जीवास्तिकाय) भी एक द्रव्य है। उसकी दो अवस्थाएँ होती हैं–स्वाभाविक अवस्था और वैभाविक अवस्था। वैभाविक अवस्था से मुक्त हो स्वाभाविक अवस्था में स्थित होना ही अध्यात्म और धर्माराधना का उद्देश्य होता है। उसके लिए आश्रवनिरोध आवश्यक होता है।

नव तत्त्वों में छठा तत्त्व है संवर। यह स्वभावतः आश्रव से ठीक विपरीत होता है। आश्रव (कर्म-आगमन के द्वार) को रोकना ही संवर है। उसके मुख्य पाँच प्रकार हैं–सम्यक्त्व संवर, व्रत संवर, अप्रमाद संवर, अकषाय संवर और अयोग संवर। विस्तार में उसके बीच भेद भी किए जा सकते हैं। **(क्रमशः)**

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य भिक्षु युग

❑ **मुनि जोधोजी (करेडा) दीक्षा क्रमांक : ४६**

मुनिश्री महान् तपस्वी थे। उन्होंने उपवास, बेले, तेले, चोले, पंचोले आदि बहुत किए। इसके अलावा अनेक बड़े थोकड़े किए।

यह सब तपस्या मुनिश्री ने आछ के आगार से की। अंत में ३८ दिन का अनशन कर स्वर्ग पधारे।

– : साभार : शासन समुद्र : –

सप्ताह के विशेष दिन

1 मार्च, 2024 — **भगवान सुपार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक**

3 मार्च, 2024 — **भगवान सुपार्श्वनाथ निर्वाण कल्याणक**

3 मार्च, 2024 — **भगवान चंद्रप्रभु केवलज्ञान कल्याणक**

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
समाचार प्रेषकों से निवेदन

संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र अ०भा०ते० टाइम्स में तेरापंथ धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है। समाचार प्रेषकों से निवेदन है कि समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा हुआ हो। न्यूज पेपर कटिंग नहीं भेजें। समाचार केवल E-mail : **abtyptt@gmail.com** पर सिर्फ PDF File में ही भेजें।

–: निवेदक :–

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

अणुव्रत भवन, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२
E-mail : abtyptt@gmail.com

✦ *उपदेश सुनने की भावना भी अच्छी बात है। उपदेश की सौ बातें सुनी जाएँगी तो उसमें से दो-चार बातें जीवन में हृदयंगम भी हो सकती हैं, उतर भी सकती हैं।*

✦ *अणुव्रत के रूप में नैतिकता व्यक्ति के जीवन में आ जाए तो वह परिवार के लिए, समाज के लिए, देश के लिए और विश्व के लिए कल्याणकारी बात हो सकती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ कट्टरता सर्वत्र बुरी नहीं होती। वह बहुत अच्छी व आवश्यक भी होती है। व्रत पालन आदि के संदर्भ में तो कट्टरता अमृत है।

आचार्य श्री महाश्रमण

सहन करो सफल बनो

अहमदाबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में प्रेक्षावाहिनी, शाहीबाग-अहमदाबाद व तेरापंथ सेवा समाज के संयुक्त प्रयास से तेरापंथ भवन में प्रेक्षाध्यान के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। साध्वी तरुणप्रभा जी ने स्मरण शक्ति के साधक व बाधक तत्त्वों पर प्रकाश डाला।

साध्वी परमार्थप्रभा जी ने तनाव के कारण व निवारण पर प्रकाश डालते हुए सकारात्मक व कलात्मक जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान की। साध्वी हेमरेखा जी ने जीवन में सफलता का राज विषय पर उद्‌बोधन दिया। 'सहन करो-सफल बनो' आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के वाक्य को जीवन व्यवहार में उतारने की प्रेरणा प्रदान की।

प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने कहा कि प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का अनमोल वरदान है, जो आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त होने का राजमार्ग है। प्रेक्षाध्यान का प्रयोग नियमित करें तो समाधि व विकास का राजमार्ग प्रशस्त हो सकता है। स्मरणशक्ति विकास, तनाव प्रबंधन, जीवन में सफलता के राज पर प्रकाश डालते हुए प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाए गए।

तेरापंथ सेवा समाज के प्रधान ट्रस्टी सज्जनराज सिंघवी ने कहा कि प्रेक्षाध्यान व योग आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का विश्व शांति व सद्‌भावना के लिए महान अवदान है। तेरापंथ सेवा समाज के ट्रस्टी मंत्री दिनेश बालर ने स्वागत किया तथा योग व ध्यान प्रतिदिन करने की प्रेरणा दी। छितरमल मेहता, मीनाक्षी घीया, रेखा सुतरिया, रामेश्वर सुतरिया ने प्रेक्षा गीत का संगान किया। त्रिपदी वंदना प्रेक्षा प्रशिक्षक अनिता छाजेड़, श्वेता लुनिया, रंजना डांगी ने करवाई। मंगलभावना व संकल्प प्रेक्षा प्रशिक्षक सुषमा मरोठी, हेमलता परमार, पिस्ता छाजेड़ ने करवाई।

प्रेक्षा प्रशिक्षक धर्मेन्द्र कोठारी, विमल बाफना, रूपल पंडिया ने श्वास के सम्यक् प्रयोग करवाए। नेहरू युवा केंद्र के लगभग २२५ साधक-साधिकाओं ने उत्साह से भाग लिया व कार्यक्रम से प्रभावित होकर प्रतिदिन १५ मिनट प्रेक्षाध्यान व योग करने का संकल्प किया। कार्यक्रम का संयोजन व संचालन जवेरीलाल संकलेचा ने किया।

इंटरिम यूनियन बजट-२०२४-२५ का विश्लेषण एवं समस्याओं का निवारण

साउथ कोलकाता।

टीपीएफ ने इंटरिम यूनियन बजट २०२४-२०२५ की गहन विश्लेषण एवं अन्य वर्तमान असेसमेंट में आने वाली दिक्कतों का निवारण की कार्यशाला का आयोजन आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर, कोलकाता में किया गया।

टीपीएफ के कोषाध्यक्ष गौरव मालू ने सभी का स्वागत किया। टीपीएफ नेशनल फ्यूचरा को-कन्वेनर रोहित दुगड़ एवं टीपीएफ नेशनल फेमिना को-कन्वेनर कंचन सिरोहिया ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत की। टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष प्रवीण कुमार सिरोहिया ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। उन्होंने टीपीएफ के सभी आयामों के बारे में जानकारी दी। टीपीएफ के ईस्ट जोन-१ की मंत्र बबिता बैद ने टीपीएफ के आगामी कार्यक्रमों के बारे में बताया।

परिषद के संगठन मंत्री सुमित नाहटा ने कार्यशाला के प्रथम वक्ता सुमेरमल सुराणा का सभी से परिचय करवाया। इस कार्यशाला में टीपीएफ के वरिष्ठ सदस्य सुमेरमल सुराना का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने इनकम टैक्स में सभी के लिए उपयोगी जानकारियाँ एवं सुझाव दिए तथा बजट एवं असेसमेंट से संबंधित सारे इनकम टैक्स के पहलुओं को समझाते हुए लोगों का ज्ञानवर्धन किया। रोहित दुगड़ ने कार्यशाला के द्वितीय वक्ता प्रवीण कुमार सुराणा का परिचय दिया। प्रवीण कुमार ने सभी के लिए जीएसटी से संबंधित उपयोगी जानकारियाँ एवं सुझाव दिए। कार्यक्रम के अंत में प्रवीण कुमार सुराणा ने सभी लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कंचन सिरोहिया ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में टीपीएफ, सभा के पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष गौरव मालू ने किया।

संघ हमारा, हम संघ के

तिरुवन्नामलाई।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'संघ के प्रति अपना दायित्व' कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। साध्वीश्री जी ने कहा कि संघ हमारा त्राण है, गति है, प्रतिष्ठा है, शरण है, द्वीप है। संघ हमारा है हम संघ के हैं, यह समर्पण ही व्यक्ति को दायित्व की अनुभूति करा सकता है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि २१वीं सदी में हमारा धर्मसंघ १६ नहीं २१ हो, हमारे धर्मसंघ का गौरव कैसे बढ़ें इसका चिंतन करें। सभी मिलकर एक नई क्रांति को जन्म दे, जिससे समाज में, संघ में, परिवार में, खुशहाली आ सके। साध्वी मेरूप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका के साथ प्रस्तुति दी। साध्वी दक्षप्रभा जी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

आहार शुद्धि, अहिंसक चेतना जागृति, शनिवार की सामायिक ऐसे कई सारे कर्तव्य को भी प्रामाणिकता से निभाना चाहिए। कुछ बहनों ने भिक्षु स्वामी के दृष्टांत से संघ के प्रति निष्ठा और संघ की मर्यादाओं को कैसे आचरण में लाना और जीवन में अनुशासित रहना चाहिए, विषय पर प्रस्तुति दी।

✦ *जहाँ तक संभव हो सके, परावलंबी बनने से बचें।*

✦ *श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

२४०० उपवास की भेंट

कोपरखेरना (नवी मुंबई)।

मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से ५१ संभागियों ने ५१ महीने १५५१ दिन लगातार २४०० उपवास करके तेरापंथ समाज, गोरेगाँव ने प्रवक्ता उपवास सुरेश ओस्तवाल के संयोजन में एवं तेरापंथ समाज और सभी पदाधिकारियों की सहभागिता से त्याग की गंगा में डुबकी लगाकर उपवास की लड़ी को अपने तारणहार, पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में तेरापंथ समाज ने सामूहिक उपवास करके परिसंपन्न किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपना मंगलमय आशीर्वाद एवं प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। सभा अध्यक्ष चतरलाल सिंघवी ने पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, तेयुप, तेममं, किशोर मंडल, कन्या मंडल, अणुव्रत परिवार एवं तेरापंथ समाज की सहभागिता रही।

अणुव्रत प्रबोधन परीक्षा के विविध आयोजन

बैंगलुरु।

अणुविभा के निर्देशन में पूरे भारत में अणुव्रत प्रबोधन परीक्षा का आयोजन हुआ। दक्षिण भारत के लाभार्थियों की सुविधा हेतु दक्षिण स्तरीय परीक्षा का आयोजन अणुव्रत समिति, बैंगलुरु द्वारा तेरापंथ सभा भवन, गांधीनगर में आयोजित किया गया।

नमस्कार महामंत्रोच्चार से परीक्षा की शुरुआत हुई। केंद्रीय राज्य प्रभारी एवं शाखा पर्यवेक्षक कैलाश बोराणा एवं मंत्री हरकचंद ओस्तवाल ने केंद्र से प्राप्त प्रश्न पत्रों को खोला। परीक्षक नीतू पालगोता ने सभी प्रतिभागियों को परीक्षा के नियमों से अवगत कराया। समिति उपाध्यक्ष एवं संयोजक माणकचंद संचेती ने सभी के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की। ४० प्रतिभागियों ने परीक्षा में भाग लिया। अध्यक्ष देवराज रायसोनी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

ठाणा (मुंबई)।

अणुविभा द्वारा आयोजित अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता-२०२३ के मुंबई केंद्र पर आयोजित द्वितीय चरण में ४६ प्रतियोगी शामिल हुए। प्रथम चरण में ४०० में से ४०० अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगियों को द्वितीय चरण के लिए अनुमत किया गया था। प्रतियोगिता का द्वितीय चरण भारतवर्ष में पाँच केंद्रों पर आयोजित किया गया।

मुंबई में तेरापंथ भवन में आयोजित इस प्रतियोगिता के राष्ट्रीय संयोजक अशोक चोरड़िया, मुंबई अणुव्रत समिति अध्यक्ष रोशन मेहता, केंद्रीय परीक्षा प्रभारी हेमलता सोनी तथा निधि सिंघवी, ठाणे संयोजक रतन सियाल व सह-संयोजिका विमला हिरण की उपस्थिति रही।

तेरापंथ धर्मसंघ का प्राण है सेवा और मर्यादा

नोखा।

तेरापंथ धर्मसंघ का महाकुंभ १६०वाँ मर्यादा महोत्सव आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में नवी मुंबई में आयोजित है। संपूर्ण देश में भी बसंत पंचमी से त्रिदिवसीय आयोजन हो रहा है। तेरापंथ का प्राण तत्त्व है सेवा और मर्यादा। यह उद्‌गार शासन गौरव साध्वी राजीमती जी ने तेरापंथ भवन, नोखा में व्यक्त किए।

डॉ० साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने कहा कि जिसके भीतर सेवा करने की लगन हो, अहोभाव हो वह कर्मों को काट देता है। तेरापंथ की आधारशिला ही सेवा है। रोगी, ग्लान, वृद्ध व असहाय की सेवा पहला कार्य है।

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा मर्यादा व सेवा भावना से ओत-प्रोत गीत का संगान किया गया। उपासक अनुराग बैद, सभाध्यक्ष इंदरचंद बैद 'कवि', साध्वी कृतार्थप्रभा जी, साध्वी आगमप्रभा जी ने विचार व्यक्त किए।

'राजनीति का आकाश और अणुव्रत' विषयक सांसद संगोष्ठी का आयोजन

समाज का चारित्रिक उन्नयन सांसदों की नैतिक जिम्मेदारी

नई दिल्ली।

नई दिल्ली के पुराने संसद भवन में अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत संसदीय मंच द्वारा 'राजनीति का आकाश और अणुव्रत' विषयक संगोष्ठी का आयोजन साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में हुआ।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि संयम आत्मानुशासन से ही संभव है। आपने सांसदों का आह्वान किया कि जन प्रतिनिधियों की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वे स्वयं के साथ समाज में नैतिकता और चारित्रिक उन्नयन तथा नैतिकता को पुनर्जीवित करने का प्रयास करें तो बुराइयों, नैतिक ह्रास एवं पतन को रोका जा सकेगा। अणुव्रत गीत से साध्वी सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी व समणी स्वर्णप्रज्ञा जी ने मंगलाचरण किया।

अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अपने स्वागत भाषण में अणुविभा द्वारा संपादित किए जा रहे विभिन्न प्रकल्पों को सांसदों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए उनसे सक्रिय सहयोग की अपेक्षा की। आपने जीवन विज्ञान के माध्यम से भावी पीढ़ी के नैतिक उत्थान हेतु सांसदों को प्रेरित किया, जिसके लिए सभी सांसदों ने पूर्ण सहयोग की भावना व्यक्त की।

केंद्रीय कानून, संसदीय कार्य और संस्कृति राज्य मंत्री एवं अणुव्रत संसदीय मंच के संयोजक अर्जुनराम मेघवाल ने कहा कि अणुव्रत अनुशास्ता महान संत आचार्यश्री तुलसी ने अपनी दूरदर्शी सोच से वर्षों पूर्व स्वयं द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से न केवल नेताओं बल्कि आम व्यक्ति के लिए सटीक आचार संहिता बना दी थी, जो कि आज भी सर्वाधिक प्रासंगिक है, यह सुखद संयोग ही है कि देश की आजादी के साथ ही यह वर्ष अणुव्रत का भी अमृत काल वर्ष है।

इस अवसर पर इंदौर के सांसद शंकरलाल लालवानी, जम्मू-कश्मीर के जुगल किशोर, वडोदरा की रंजना भट्ट, जयपुर के राम चरण बोहरा, सिरसा की सुनीता दुग्गल, मेरठ के राजेंद्र अग्रवाल, कर्नाटक के लहर सिंह सिरोया, महसाना की शांता बहन आदि ने अणुव्रत संसदीय मंच की सराहना करते हुए संयम, अपरिग्रह, नैतिकता, सत्य, अहिंसा के मूल मंत्रों को अंगीकार करने के साथ ही युवा पीढ़ी में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाने के लिए सामूहिक प्रयासों पर बल दिया।

संगोष्ठी में अनेकों सांसदों के साथ अणुव्रत समिति, दिल्ली एवं तेरापंथ सभा, दिल्ली के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया ने किया। आभार ज्ञापन अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा ने किया।

मर्यादा शोभायात्रा का आयोजन

पुणे।

मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि भव्य कुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी के सान्निध्य में मर्यादा रैली कोंढवा रोड से चलकर तेरापंथ सभा भवन में समाप्त हुई। रैली में तेरापंथ धर्मसंघ की सभा-संस्थाओं के साथ पूरा समाज जुड़ा हुआ था। सभा अध्यक्ष महावीर कटारिया, तेयुप अध्यक्ष मनोज सकलेचा, अणुव्रत समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र चोरड़िया, अध्यक्ष पुष्पा कटारिया सभी ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए अपने विचार व्यक्त किए।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ के लिए जो मर्यादाएँ बनाई, उन्हें मर्यादा महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन २०० वर्षों पूर्व जो मर्यादाएँ बनाई गईं उनका पाठ किया जाता है और उन्हें पूर्ण समर्पण व निष्ठा से पालने की प्रेरणा और शिक्षा दी जाती है। आचार्य समय के अनुसार नई मर्यादाएँ बनाकर शिष्यों एवं धर्मसंघ के विकास का पथ प्रशस्त करते हैं।

गुजरात अंचल ज्ञानशाला गोष्ठी

अहमदाबाद।

आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त ज्ञानशाला का अवदान प्रत्येक तेरापंथी बालक-बालिका के लिए संस्कार सिंचन का अद्वितीय माध्यम बन रहा है। ज्ञानशाला विकास में ज्ञानशाला के पर्यवेक्षक मुनि उदित कुमार जी एवं सह-पर्यवेक्षक मुनि हिमांशु कुमार जी का मार्गदर्शन एवं प्रेरणा भी समय-समय पर मिलती है। गुरुदेव के इंगित को सार्थक करने की दिशा में तेरापंथी महासभा के निर्देशन में ज्ञानशाला प्रकोष्ठ एवं प्रत्येक अंचल अहर्निश प्रयत्नशील है। गुजरात अंचल के विशिष्ट प्रयासों की फलश्रुति है–'ज्ञानशाला एप्लीकेशन एंड ट्रिपल जी'।

ज्ञानशाला को डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रस्तुत करते हुए 'ज्ञानशाला एप्लीकेशन एंड ट्रिपल जी' के विशिष्ट प्रयास के वर्चुअल लॉन्चिंग का कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा रहे। गुजरात अंचल के आंचलिक संयोजक प्रवीण मेडतवाल ने नमस्कार महामंत्र के स्मरण से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। ज्योति मेडतवाल ने मंगलाचरण के द्वारा वातावरण को मंगलमय बनाया।

प्रवीण मेडतवाल ने मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा एवं गुजरात अंचल की विभिन्न ज्ञानशालाओं के क्षेत्रीय संयोजक, सह-संयोजक, ज्ञानशाला संयोजक, मुख्य प्रशिक्षिका, सहयोगी प्रशिक्षिकाओं का एवं उपस्थित डिजिटल टीम सदस्यों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। गुजरात अंचल के आंचलिक सह-संयोजक भावेश हिरण ने नवीन प्रकल्प की आवश्यकताओं की जानकारी दी।

राष्ट्रीय संयोजक सोहनराज चोपड़ा ने कहा कि गुजरात आंचल सदा नए-नए कार्य करने में अग्रसर रहता है। टेक्निकल टीम से समागत विशाल पारख ने एप्लीकेशन की विस्तृत जानकारी दी। वर्षा जैन ने ज्ञानार्जन में गेम्स का महत्त्व और उपयोगिता की जानकारी दी। टेक्निकल टीम की सदस्या सोनू चावत ने गेम का प्रयोग करवाया। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ की केंद्रीय टीम से संलग्न चांददेवी छाजेड़ एवं प्रियंका बोथरा ने नए प्रकल्प के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किया। प्रवीण मेडतवाल ने प्रशिक्षिकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान दिया। विशाल पारख ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन अहमदाबाद शहर क्षेत्रीय सह-संयोजिका आशा खाब्या ने किया।

कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न और गजराज के तुल्य...

(पृष्ठ १० का शेष)

मानव जीवन, कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न और गजराज से कम नहीं है इसका बड़ा महत्त्व है। इसको व्यर्थ खो देना अभागेपन की बात हो जाती है। जो आदमी मानव जीवन पाकर पाप कार्यों में रचा-पचा रहता है, वह तो पापात्मा-दुरात्मा है, मानव जन्म रूपी पूँजी को खोकर और नीचे चला जाता है। एक आदमी न ज्यादा धर्म करता है, न ज्यादा पाप करता है, वह मूल पूँजी को सुरक्षित रख लेता है, न कमाया न गँवाया।

एक आदमी पाप तो करता नहीं है, पर तपस्या-साधना करता है, साधु बन जाता है, श्रावक बन जाता है, वह आदमी मरकर देवगति में जन्म ले सकता है। मूल पूँजी को बढ़ा लेता है। इस जीवन से मोक्ष में जाना तो बहुत ही ऊँची चीज हो जाती है। वैमानिक देवगति पाना भी बड़ी बात है। सम्यक्त्वी होना बहुत बड़ी सफलता है। हमारा दृष्टिकोण आध्यात्मिक रहे। सम्यक्त्व आ गया तो फिर आत्मा को मोक्ष कभी न कभी तो जाना ही है। मनुष्य ही मोक्ष में जा सकता है। हमें मनुष्य जन्म प्राप्त है, इसका आध्यात्मिकता में उपयोग करें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म के मर्म को आत्मसात करें

नोखा।

व्यक्ति समय का नियोजन करे। यूँ ही अनमोल रत्न मानव जीवन को न गँवाएँ। मनुष्य चिंतनशील प्राणी है। धर्म, पाप-पुण्य, सेवा, अच्छा-बुरा जानता है। रात्रि में सोने से पहले चिंतन करें क्या? आज क्या अच्छा किया, क्या बुरा किया? धर्म के मर्म को समझें, कुछ परिवर्तन हुआ या ऐसे ही क्रोध, मान, माया, लोभ बढ़ रहे हैं। आवश्यकता है हमारा जीवन बोले कि धार्मिक है–यह मार्मिक उद्गार तेरापंथ भवन, नोखा में डॉ० साध्वी चरितार्थप्रभा जी ने व्यक्त किए।

प्रारंभ में साध्वी आगमप्रभा जी ने आलस्य प्रमाद छोड़ करके कुछ समय धर्म-ध्यान अध्यात्म में लगाने की प्रेरणा दी।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19-25 फरवरी, 2024

✦ जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।
आचार्य श्री महाश्रमण

आत्म शोधन करने का एक उपाय है ध्यान : आचार्यश्री महाश्रमण

उरण, ७ फरवरी, २०२४

अनुकंपा के उत्प्रेरक, महान योगी, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उरण प्रवास के दूसरे दिन पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म साधना के अनेक प्रयोग निर्दिष्ट हैं। स्वाध्याय कर्म निर्जरा का माध्यम है तो ध्यान भी साधना का एक प्रयोग होता है। तप में रत रहना, अपाप भाव में रहना, ये सब उपाय आत्मा को निर्मल बनाते हैं। अध्यात्म साधना में आगे बढ़ने का और आत्म शोधन करने का एक उपाय है–ध्यान।

आज विश्व में अनेक ध्यान पद्धतियाँ अलग-अलग नामों से प्रचलित हैं। योग का भी प्रसार हुआ है, चिकित्सा के क्षेत्र में भी योग का प्रयोग होता है। शरीर के अंगों के लिए यौगिक क्रियाएँ प्रचलित हैं। अध्यात्म की साधना में भी योग का बड़ा व्यापक स्थान है। आचार्य हेमचंद्र ने 'अभिधान चिंतामणि' में कहा है कि मोक्ष का उपाय योग है। सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र ये सभी योग हैं।

जो जोड़ने की चीज होती है, वो योग है। जो मोक्ष के साथ आत्मा को जोड़ दे, वो योग है। धर्म की सारी प्रवृत्तियाँ योग हैं, क्योंकि वे मोक्ष से जोड़ने वाली होती हैं। जैन तत्त्वविद्या में योग की एक और परिभाषा प्राप्त होती है–शरीर, वचन और मन की प्रवृत्ति योग है। योग से अयोग की दिशा में बढ़ने पर मोक्ष प्राप्त हो सकता है। ध्यान-अध्यात्म साधना का एक प्रयोग है, जैसे शरीर में सिर का स्थान है, वृक्ष के लिए मूल का महत्त्व है, वैसे ही अध्यात्म में ध्यान का महत्त्व है। ध्यान पद्धतियाँ अलग-अलग मिलती हैं, संप्रदाय भी अलग-अलग हैं। संप्रदायों में भी प्रायः समानता मिलती है, अंतर बहुत कम हैं, अधिकतर बातों में समानता मिल जाती है। संप्रदायों में अलगाव होने पर भी आपस में लगाव, सद्भावना होनी चाहिए। ध्यान पद्धतियाँ भी अलग-अलग हैं पर मूल तत्त्वों में समानता मिल सकती है। चेतना सभी की समान होती है, आकारों में कुछ भिन्नता हो सकती है।

भाव क्रिया का अभ्यास बढ़ जाए, वो भी किसी अंश में ध्यान की प्रक्रिया है। चलते समय या सोते समय भाव क्रिया कर सकते हैं। दैनंदिन जीवन में ध्यान को जोड़ सकते हैं। आचार्य तुलसी के समय में जयपुर में सन् १९७५ में प्रेक्षाध्यान का नामकरण हुआ था। भाव क्रिया, प्रतिक्रिया विरति, मैत्री मिताहार, मितभाषण, इन पाँच सूत्रों को जीवन शैली के अंग बना लें। कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वास प्रेक्षा आदि अनेकों प्रयोगों से संयुत प्रेक्षाध्यान का अच्छा प्रयोग किया जा सकता है। हम ध्यान की आराधना करने का प्रयास करें।

अमृत देशना के उपरांत पूज्यप्रवर ने नवदीक्षित मुनि मुकेश कुमार जी को छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण करवाया। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अणुव्रत समिति, मुंबई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, उरण व्यापारी संघ से हस्तीमल मेहता, पूर्व एमएलए मनोहर भोईर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। समणी मधुरप्रज्ञा जी ने गुरु दर्शन कर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला, किशोर मंडल, कन्या मंडल ने अपनी प्रस्तुति दी। कन्या मंडल एवं तेयुप ने पृथक-पृथक गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कल्पवृक्ष, चिंतामणि रत्न और गजराज के तुल्य महत्त्वपूर्ण है मानव जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

जसाई, ८ फरवरी, २०२४

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी २०२४ का मर्यादा महोत्सव करने हेतु वाशी-नवी मुंबई की ओर पधार रहे हैं। आज पूज्यप्रवर का पदार्पण छत्रपति शिवाजी एवं उनके गुरु को समर्पित 'शिव समर्थ स्मारक' में हुआ। मंगल पाथेय प्रदान करते हुए परम पावन ने फरमाया कि मनुष्य जन्म दुर्लभ बताया गया है। जो इस दुर्लभ जन्म का धर्म के संदर्भ में लाभ उठा लेता है, वह मानो धन्य, कृत-कृत बन जाता है।

जो मनुष्य इस जन्म को पापों, व्यसनों में गँवा देता है, वह एक अभागा आदमी होता है। धर्म का मौका प्राप्त हो गया पर भोग के कारण आदमी धर्म को छोड़ देता है तो मानना चाहिए कि उसने कल्पवृक्ष को उखाड़कर घर में धतूरे का वृक्ष लगा दिया है। चिंतामणी रत्न को फेंककर काँच के टुकड़े को ग्रहण करता है। किसी के पास गजराज था उसको बेचकर वह गधे को खरीदकर घर में रखता है। ऐसे आदमी नादान कहलाते हैं। **(शेष पृष्ठ ६ पर)**

रक्तदान शिविर के आयोजन

राजाजीनगर

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप, राजाजीनगर के तत्त्वावधान में राउंड ईयर ह्यूमैनिटी थीम रक्तदान-२०२४ ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन राजश्री अपार्टमेंट में किया गया। रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। शिविर में कुल ३३ यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। ब्लड बैंक ने परिषद परिवार को सम्मानित करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। शिविर को व्यवस्थित आयोजन करने में एमीबीडीडी प्रभारी सुनील मेहता, संयोजक विनोद कोठारी, चेतन मांडोत का अथक श्रम नियोजित हुआ।

गंगाशहर

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, गंगाशहर के एमबीडीडी संयोजक विजेंद्र छाजेड़ ने बताया कि इस कार्यक्रम में बीकानेर रेलवे सुरक्षा बल के सुरक्षा कर्मियों के साथ पीबीएम ब्लड बैंक में गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में २६ यूनिट रक्त एकत्र किया गया।

तेयुप अध्यक्ष अरुण कुमार नाहटा ने बताया कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, नेत्रदान और युवावाहिनी जैसे सेवा के उपक्रम संगठन को ऊँचाइयों की ओर ले जा रहे हैं। तेयुप मंत्री भरत गोलछा ने बताया कि इस कैंप में सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज के वाइस प्रिंसिपल डॉ० एन०एल० माहावर व उनकी पूरी टीम का सहयोग रहा। कैंप के दौरान बीकानेर रेलवे सुरक्षा बल के चीफ संजय पिसे, गंगाशहर तेयुप के अध्यक्ष अरुण कुमार नाहटा, रक्तदान शिविर प्रभारी विजेंद्र छाजेड़, युवा एवं किशोर साथी उपस्थित थे।

स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

अहमदाबाद

तेयुप, अहमदाबाद द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के ६वें वर्ष प्रवेश पर रक्त जाँच शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन, शाहीबाग के प्रांगण में किया गया। अभातेयुप के प्रबुद्ध विचारक मुकेश गुगलिया, अभातेयुप परिवार, तेयुप अध्यक्ष कपिल पोखरना एवं समस्त पदाधिकारी टीम समाज के विभिन्न सभा-संस्थाओं के अध्यक्ष-मंत्री की उपस्थिति रही।

एटीडीसी अहमदाबाद के मुख्य संयोजक अशोक बागरेचा, प्रकाश भरसरिया, मुकेश गुगलिया, अरुण बैद, मोहन चोपड़ा, मनोज लूनिया एवं उनकी समस्त टीम का शिविर को सफल बनाने में श्रम रहा। शिविर के अंतर्गत तीन तरह की प्रोफाइल टेस्ट रखे गए, जिसमें कुल ६० टेस्ट हुए।

शिविर में तेयुप कार्यकर्ताओं सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

हनुमंतनगर

तेयुप, हनुमंतनगर द्वारा गणतंत्र दिवस पर तीन दिवसीय हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें २६ तरह की जाँच रियायती मूल्य पर की गई। इस जाँच के ४२ लाभार्थी रहे। अध्यक्ष अंकुश बैद ने सभी का स्वागत किया। सभी कार्यकर्ताओं को एटीडीसी से सक्रिय रूप से जुड़कर और ऊँचाइयों पर ले जाने का लक्ष्य रखा। इस अवसर पर एचबीएसटी एटीडीसी प्रभारी गौतम खाब्या को अभातेयुप द्वारा क्षेत्रीय सहयोगी मनोनीत होने पर सम्मानित किया।

इस कार्यक्रम में तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष महावीर चावत, संस्थापक अध्यक्ष रतन कटारिया, उपाध्यक्ष महावीर कटारिया, मंत्री राजीव हिरावत, सहमंत्री देवेंद्र आंचलिया सहित अनेक सदस्य एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

दया का भाव आदमी को हिंसा से बचाने वाला और परोपकार में प्रवृत्त करने वाला हो सकता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 फरवरी - 25 फरवरी, 2024

सफलता के पौधे को मिलता रहे परिश्रम के जल का सिंचन आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, नवी मुंबई।
१५ फरवरी, २०२४

मर्यादा समवसरण में महाप्रज्ञ पट्टधर आचार्य श्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में मर्यादा महोत्सव के द्वितीय दिवस का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

संघ ही शरण:

मुमुक्षु बहनों ने समवेत स्वरों में 'भिक्षु का ये शासन है, प्राण अनुशासन है' गीत की प्रस्तुति के माध्यम से संघ सेवा एवं समर्पण की भावना को मुखरित किया।

नेता कैसा हो ?

मुख्य मुनि श्री महावीर कुमार जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा- आचार्य तुलसी ने लिखा है कि जिस धर्म संघ में सतत् एक आचार्य का नेतृत्व है, जिसकी तत्त्व निरुपण की शैली एक है, जिसका एक आचार और एक सामाचारी है, ऐसा तेरापंथ इस जगत् में अर्हत् की आज्ञा के अनुसार जय-विजय को प्राप्त करे। भगवान महावीर का, भिक्षु स्वामी का तेरापंथ एक ओजस्वी, तेजस्वी, शक्ति संपन्न धर्म संघ है जो सारे जग को नित नई रोशनी देने वाला है।

इस धर्मसंघ को सिंचित, पल्लवित करने में पूर्वाचार्यों ने, साधु-साध्वियों ने एवं श्रावक-श्राविकाओं ने भी अपना योगदान और बलिदान दिया है। हमें समय-समय पर कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ है। नेता के पांच गुण बताए गए हैं:

१. जो सब दृष्टियों से सक्षम हो।
२. जो सब दोषों को दूर करने वाला हो।
३. जो सामंजस्य विधायक हो।
४. जिसका वचन आदेय हो।
५. जो निर्णायक मति वाला हो।

हमें ऐसे ही नेता प्राप्त हैं जो हम सब की जीवन नैया को खेने वाले हैं।

आणा प्राणां में बड़ो कुण ?

आचार्य श्री तुलसी ने लिखा है:

आणा प्राणां में बड़ो कुण?
यदि खड़ो विवाद।
आण प्रमुखता जिण विना,
बने प्राण बेस्वाद।
विद्या बल वैभव विपुल,
प्रभुता परम पुनीत।

पर आज्ञा बल स्यूँ विकल,
सदा रहे भयभीत।।

आज्ञा और प्राण में आज्ञा का सर्वोपरि महत्व बताया गया है।

समाज में मूल्यों की अपेक्षा होती है, जो समाज जितने मूल्यों से संपन्न होता है, वे ही मूल्य उस समाज की दिशा का निर्धारण करते हैं। कौन सा मूल्य कितना प्रभावशाली है, उसकी कसौटी है उसका परिणाम। परम पूज्य आचार्य भिक्षु ने इस बात को गहराई से पकड़ा कि विनय जिनशासन का मूल है। विनय वही कर सकता है जिसके भीतर कषाय, अहंकार का विलय और समता का प्रादुर्भाव हो गया हो। वही व्यक्ति आज्ञा की आराधना कर सकेगा जिसके भीतर विनय का भाव होगा। आत्मा और मोक्ष को मानना है तो आज्ञा को भी स्वीकारना होगा। आज्ञा के बिना धर्म का अंश मात्र भी नहीं है।

कौन सी नीति अच्छी: मर्कट या मार्जार?

शासन अनुशासन के बिना निष्प्राण है, उसके लिए समर्पण की आवश्यकता है। दो तरह की नीतियां बताई गई हैं - मर्कट (बंदर) नीति और मार्जार (बिल्ली) नीति। बंदर का शिशु अपनी मां को अपने सामर्थ्य के अनुसार पकड़ कर रखता है, उसका चिंतन रहता है कि मेरी रक्षा मुझे स्वयं करनी है। वहीं दूसरी ओर बिल्ली का बच्चा बिल्कुल निश्छल रहता है, वह समर्पित रहता है और मां के आधार पर जीता है। वह अपनी मां को नहीं अपितु उसकी मां उसे पकड़ कर रखती है। एक शिष्य भी यदि स्वयं को गुरू चरणों में सर्वात्मना समर्पित कर देता है तो उसके विकास का, उसके हित का चिंतन स्वयं गुरु करते हैं। जो स्वयं के सामर्थ्य को महत्त्व देता है, वह अहं भाव में आकर अपने विकास को अवरूद्ध कर देता है। हम सभी संघ रूपी रथ में सवार रहें, एक गुरु के अनुशासन में रहें, आज्ञा, अनुशासन और मर्यादा की शरण में रहें।

महाप्रज्ञ पट्टधर ने दिए विनय के संस्कार:

परम् पावन आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपनी मंगल देशना में कहा कि अनुशासन और मर्यादा को सम्यकतया संचालित करने के लिए विनय के संस्कारों का सम्पोषण अपेक्षित होता है। एक ओर विनय होता है तो दूसरी ओर वत्सलता का भाव भी अपेक्षित होता है। देखा जाए तो विनय और वात्सल्य दोनों में निरहंकारिता का भाव रहता है। विनय केवल छोटों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी काम्य होता है। यदि शिष्य में विनय है तो वह शिष्य भी महान है और यदि गुरू में विनय नहीं है तो एक अपेक्षा से गुरू छोटा हो जाएगा और शिष्य बड़ा हो जाएगा। गुरु कभी कड़ाई भी कर सकते हैं पर उसके पीछे भी शिष्य के हित की भावना होती है। आचार्य डालगणी कभी कड़ाई करते, गुरुदेव तुलसी भी कभी-कभी कड़ाई करते, इसके लिए भी बल चाहिए। प्रशासन भी कड़ाई करता है, न्यायालय भी दंड निर्धारित करते हैं पर इनका लक्ष्य गलत नहीं होता, पृष्ठभूमि में सबके हित की भावना रहती है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ पदारोहण दिवस:

माघ शुक्ला षष्ठी, मर्यादा महोत्सव का मध्यवर्ती दिवस एवं तेरापंथ के दशम् अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का पदारोहण दिवस भी है। गुरुदेव तुलसी ने स्वयं उनका पदाभिषेक किया था। तेरापंथ धर्मसंघ के हमारे इतिहास में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी और आचार्य श्री तुलसी इस माने में कोई अतिरिक्त रूप के आचार्य है।

इतिहास की अभूतपूर्व और आज तक की अद्वितीय घटना है कि किसी आचार्य ने अपने जीवन काल में अपने पद का परित्याग किया हो। आचार्य महाप्रज्ञ जी जीवन के आठवें दशक में आचार्य पद पर आसीन हुए और उस उम्र में भी उन्होने यात्राएं की। उनमें हमने करुणा और वत्सलता का भाव देखा था। उनके साहित्य, उनके प्रवचन, आगम सम्पादन का कार्य आदि को देखने से उनके ज्ञान की प्रतीति की जा सकती है। उनके पास ज्ञान भी था और उसका प्रस्तुतिकरण भी अच्छा था।

आचार्यों की अपनी-अपनी विशेषता हो सकती है, परन्तु संघ की सुरक्षा करना सभी का लक्ष्य होता है। हमारा संघ सुरक्षित रहे और विकास की दिशा में आगे बढ़ता रहे, यही सबका चिंतन होता है। यह मर्यादा महोत्सव संघ को सिंचन देने वाला, संस्कार देने वाला और प्रेरणा देने वाला है।

आज्ञा, संघ एवं आचार्य की आराधना:

हमारे धर्मसंघ में आज्ञा का बहुत महत्व है। आचार्य की आज्ञा संघ में आराधनीय होती है। कोई भी साधु-साध्वी निर्देश के विपरीत चातुर्मास या विहार नहीं कर सकते हैं, ये हमारे संस्कार हैं। आचार्य भी स्वयं आगम की आज्ञा में रहते हैं। यह गण हमारा है, जहां अपेक्षा हो, हमारा योगदान संघ की सेवा में, संघ के विकास में लगे। साधु-साध्वियां ही नहीं, श्रावक-श्राविकाएं भी संघ की आराधना करें।

आचार्य की आज्ञा में चलना और उनकी सेवा, सुश्रुषा करना भी सबका दायित्व होता है। विनीत शिष्य आचार्य के लिए साताकारी होते हैं। साध्वीप्रमुखाश्री,मुख्य मुनि, साध्वी वर्या का भी यथायोग्य सम्मान रहे। वृद्ध, रुग्ण चारित्रात्माओं को साता देने का प्रयास करें।

मर्यादा, सेवा, व्यवस्था और साधना के प्रति जागरूकता रहे। दूसरों के कल्याण एवं परस्पर सौहार्द की भावना बढ़ती रहे। सफलता के पौधे को परिश्रम के जल का सिंचन मिलता रहे।

महासभा के अधिवेशन के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने कहा कि संस्था शिरोमणि महासभा धर्मसंघ और समाज को प्राप्त है। यह समाज के लिए भाग्य की बात है।

विकास परिषद के सदस्य पदमचंद पटावरी ने आचार्य प्रवर की तीन विशेषताओं- प्रबंधन शैली, भाषा विवेक एवं निस्पृहता पर प्रकाश डाला। महासभा अध्यक्ष मनसुख सेठिया, मुंबई प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, सुमति चंद गोठी, सूरत चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष सुरेंद्र सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल वाशी ने गीत की प्रस्तुति दी।

डॉ. वंदना ने अपनी शोध पुस्तक पूज्य प्रवर की सन्निधि में लोकार्पित की। सूरत चातुर्मास एवं भुज मर्यादा महोत्सव के लोगो का अनावरण पूज्य सन्निधि में किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

पृष्ठ १२ का शेष

सभी साधु साध्वियों को चित्त समाधि में रहने एवं संयम और तप से स्वयं को भावित करने की प्रेरणा प्रदान की।

आचार्य वर ने महासभा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम आदि संगठन मूलक संस्थाओं, श्रावक श्राविकाओं की सेवा का भी उल्लेख किया।

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जय तिथि पत्रक, मित्र परिषद् कोलकाता द्वारा प्रकाशित तिथि दर्पण, मुनि जिनेश कुमार जी द्वारा लिखित एवं जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित शासन श्री मुनि श्री मोहन लाल जी आमेट की जीवनी 'अलबेले संघ सेनानी' का लोकार्पण पूज्यप्रवर को भेंट कर किया गया। मुनि मोहनलाल जी स्वामी के बारे में उद्गार फरमाते हुए आचार्यप्रवर ने कहा मुनिश्री मोहनलाल जी स्वामी गुरुदेव तुलसी के युग के अपने ढंग के संत थे, तेरापंथ के सिद्धांत, संस्कार, क्षेत्र की संभाल आदि में कुशलता प्राप्त थे। मुनि जिनेश कुमार जी उनके पास रहे हुए हैं, उनमें में भी वैसे ही संस्कार हैं। मुनि मोहनलाल जी के जीवनवृत्त से दूसरों को प्रेरणा प्राप्त हो सकेगी।

तेरापंथ सभा वाशी के अध्यक्ष विनोद बाफना, पूर्व राज्य सभा सांसद डॉ विनय सहस्त्रबुद्धे, स्वागताध्यक्ष चांदमल दुगड़, नवरतनमल गन्ना आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ समाज वाशी ने १६० मर्यादा महोत्सवों की झांकी प्रस्तुत करते हुए जय हो भैक्षव शासन गीत का सामूहिक संगान किया गया। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति ने सामूहिक गीत का संगान किया। औरंगाबाद में आयोज्य अक्षय तृतीया महोत्सव एवं जालना में आयोज्य आचार्य प्रवर के दीक्षा कल्याण महोत्सव, जन्मोत्सव, पट्टोत्सव कार्यक्रम से संदर्भित बैनर का अनावरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 फरवरी - 25 फरवरी, 2024
12
terapanthtimes.com

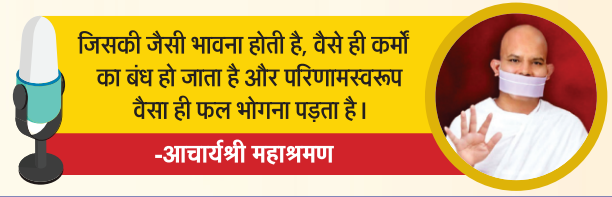

प्रथम दिवस पर पूज्य प्रवर ने की मर्यादा पत्र की स्थापना और दी सेवा करने की प्रेरणा

साधना के लिए आवश्यक है सघ का आश्रय आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, नवी मुंबई।
१४ फरवरी, २०२४

बृहत्तर मुंबई में वाशी के मर्यादा समवसरण में युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा बसंत पंचमी एवं मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन नमस्कार महामंत्र एवं आर्ष वाणी के सम्मुचारण के पश्चात मर्यादा महोत्सव की स्थापना एवं त्रि-दिवसीय कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की गई।

भारी मर्यादा बांधी संघ में:

बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि दिनेश कुमार जी ने मर्यादा घोष का उच्चारण करवाकर ओजस्वी स्वरों में मर्यादा गीत का संगान किया।

गुरु दृष्टि में बस जाएं:

मर्यादा महोत्सव के प्रथम दिन गीत का संगान कर उपासक श्रेणी ने कुछ ऐसे भाव प्रकट किए:

हम उपासक साधना में आगे बढ़ते जाएं।
अपना समय लगाए, गुरु दृष्टि में बस जाएं।।

प्रशासनिक राजधानी से आर्थिक राजधानी पहुंचे उग्रविहारी:

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी अपने सहवर्ती संतों के साथ दिल्ली से उग्रविहार कर नवी मुंबई गुरु चरणों में पधारे। मुनिश्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि हम दिल्ली से नहीं दिल से आये हैं, आज गुरुदेव के दर्शन पाकर आह्लाद की अनुभूति कर रहे हैं। मुनि श्री ने दिल्ली प्रवास की संक्षिप्त जानकारी गुरु चरणों में निवेदित की।

पूज्यप्रवर का संदेश लेकर पुनः किया विहार:

पूज्य गुरुदेव ने अनंत कृपा करवा कर मुनि कमल कुमार जी को साध्वी सोमलताजी (मुनिश्री की संसारपक्षीय बहिन) को दर्शन देने एवं चित्त समाधि पहुंचाने के लिए अपना संदेश देकर प्रस्थान करवाया।

साध्वियों की ओर से सेवा का निवेदन:

साध्वी जिनप्रभाजी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- तेरापंथ की विलक्षणता का एक घटक है- सेवा। आचार्य भिक्षु ने शिष्य प्रथा को निरस्त कर एक मात्र आचार्य को उनके योगक्षेम का अधिकार दिया। साध्वी जिनप्रभाजी ने साध्वी समुदाय के साथ सेवा केन्द्रों में सेवा देने के अवसर प्रदान करने हेतु पूज्य चरणों में निवेदन किया।

संतों की ओर से भी हुआ निवेदन:

मुनि कुमारश्रमण जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने में सेवा और सेवा केन्द्रों की व्यवस्था का अहम योगदान है। चित्त समाधि पहुंचाना सेवा का मूल रूप है। संतों की ओर से सेवा केंद्र में चाकरी हेतु निवेदन किया गया।

आचार्य पर है सेवा का दायित्व:

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि किसी भी संस्था, संघ या संगठन की दीर्घजीविता और अखंडता का एक प्रमुख तत्त्व है- सेवा। आगामों में बताया गया है कि गुरु और वृद्ध की सेवा मोक्ष का मार्ग है। तेरापंथ की सेवा विलक्षण सेवा है, जहां सभी साधु-साध्वियों की सेवा और समाधि का दायित्व आचार्य पर होता है। आचार्य न केवल साधु-साध्वियों या समणियों को अपितु श्रावक-श्राविकाओं को भी चित्त समाधि पहुंचाते हैं। इस धर्मसंघ की दहलीज पर कदम रखते ही साधु-साध्वियों और समणियों को सेवा के संस्कार प्राप्त हो जाते हैं। इस भैक्षवशासन की छत्रछाया में कोई भारभूत नहीं होता। इतिहास मिलता है कि साध्वी अणचांजी ने 16 वर्षों में 63 साध्वियों को संभाला था। सेवा की महिमा तो हर कोई गा सकता है पर अग्लान भाव से सेवा करना कठिन है। सेवाभावी में चित्त की पवित्रता, उपाय तोषण, सेवा की कला, आत्मीयता का भाव ये चार गुण होने चाहिए तभी वह सेवा समाधि दे सकती है।

साधना के लिए आवश्यक है संघ का आश्रय:

परम पावन मर्यादा के शिखर पुरुष आचार्य प्रवर ने अपनी मंगल देशना में कहा - धर्म को उत्कृष्ट मंगल बताया गया है। अहिंसा, संयम और तप धर्म है, इनके सिवाय धर्म का और कोई अंग अवशिष्ट नहीं रहता। धर्म की साधना व्यक्तिगत, आत्मगत होती है। इसके सहायक निमित्त के रूप में संगठन हो सकता है। साधना के अनुकूल परिस्थिति प्राप्त करने के लिए संघ का आश्रय लिया जा सकता है। जहाँ संघ होता है, अनेक व्यक्ति साथ में साधना करते हैं वहां मर्यादा, व्यवस्था, अनुशासन, मुखिया की आवश्यकता होती है। देश का अपना संविधान, सरकार, प्रशासन होते हैं तो देश व्यवस्थित ढंग से गति प्रगति कर सकता है। धर्मसंघ में मर्यादाएं, व्यवस्थाएं, विधान, मुखिया होता है तब धर्मसंघ भी अच्छा चल सकता है। हमारे धर्म संघ में मुखिया और विधान दोनों की व्यवस्था है। जहां संघ होता है वहां कोई रुग्ण भी हो सकता है, वृद्ध भी हो सकता है या अन्य कठिनाई या अपेक्षा भी हो सकती है। ऐसी स्थिति में सेवा की बात आवश्यक हो जाती है। तत्वार्थाभिगम सूत्र में आचार्य उमास्वाति ने लिखा है- परस्परोपग्रहो जीवानाम् - जीवों का परस्पर आलंबन होता है। एक जीव दूसरे जीव का आलंबन बनता है, उपकार करता है। यह सूत्र सेवा का आधार सूत्र बन सकता है।

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, पुद्गलास्तिकाय, ये दूसरों के आलंबन बनते हैं। जीवास्तिकाय- जीव-जीव के काम आता है, उपकार करता है। एक साधु ज्ञानी है, बहुश्रुत है, शास्त्रों का ज्ञाता है, समसामयिक विषयों पर अच्छी पकड़ रखता है, वह दूसरे साधुओं को ज्ञान दे सकता है। कोई भाषण देने में कुशल हैं, कोई व्यवस्था में सहयोग करते हैं, कोई गोचरी की व्यवस्था करते हैं, हर कोई अपनी विशेषता के द्वारा दूसरों का उपकार कर सकते हैं। पुरानी परंपरा है कि बहिर्विहार के साधु-साध्वियां भेंट लाते हैं, धर्मोपकरण की व्यवस्था कर उपकार करते हैं।

मुनि सोहनलाल जी का है उपकार:

पूज्य प्रवर ने संतों के कला कौशल की भी प्रशंसा करते हुए कहा कि मुनि सोहनलालजी 'चाड़वास' भी कला में कुशल थे। मुझे उनके पास कुछ समय रहने का भी अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने मुझे थोकड़ों का ज्ञान, तत्त्व ज्ञान, तेरापंथ की दान दया के सिद्धांत आदि बचपन में सिखाए थे। ये भी उनका एक उपकार था। गुरु और संघ के प्रति भी उनकी भक्ति अदभुत थी।

बड़ा होने का अर्थ श्रमहीन होना नहीं:

गुरुदेव तुलसी ने कितनी यात्राएं की, साहित्य, प्रशासन, प्रबंधन, जनसंपर्क, अणुव्रत आदि का कितना कार्य किया, सेवा की। उन्होंने मानों यह पाठ पढ़ाया कि बड़ा होने का अर्थ श्रमहीन होना नहीं है। साधु-साध्वियां शारीरिक-मानसिक सेवा से अन्य साधु-साध्वियों को चित्त समाधि पहुंचाने का प्रयास करें। प्रकृति से जटिल हो, उसे भी स्वीकार करने का प्रयास करें। गृहस्थ भी परिवार में सभी को परोठ कर चलें। फूल के साथ कांटा भी हो सकता है, पर एक साथ रहकर कार्य करने का प्रयास करना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि साधु- साध्वियां धर्मसंघ के सेवा केन्द्रों में :

1. अंतर्मन से सेवा करें।
2. चित्त समाधि का ध्यान दें।
3. मर्यादा, व्यवस्था का भी पालन करें।
4. उपकरणों का अनावश्यक संग्रह न हो, उनका निरीक्षण भी करें।

सेवा केंद्रों में नव नियुक्तियां कर चित्त समाधि का दिया आशीर्वाद:

साध्वियों के सेवा केंद्र

१. **लाडनूं :** साध्वी प्रमिलाकुमारी जी
२. **बीदासर :** साध्वी कार्तिकयशा जी
३. **श्रीडूंगरगढ़ :** साध्वी कुंथुश्री जी
४. **गंगाशहर :** साध्वी चरितार्थप्रभा जी एवं साध्वी प्रांजलप्रभा जी
५. **हिसार (उप सेवा केंद्र) :** साध्वी सरोज कुमारी जी

संतों के सेवा केंद्र

१. **छापर :** मुनि विनोद कुमार जी
२. **लाडनूं :** मुनि रणजीत कुमार जी

आचार्य प्रवर द्वारा आगामी कार्यकाल के लिए सेवा केंद्रों में सेवादायी सिंघाडों की घोषणा की गई। इन घोषणाओं के साथ ही पूज्यप्रवर ने मुनि विनोद कुमार जी को अनिश्चित काल के लिए व्यवस्थापक के रूप में नियुक्त किया। (शेष पृष्ठ ११ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै-जी-के- फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**